अवध की आवाज

www.avadhkaawaz.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र राजधानी लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित

वर्ष–12 अंक–188 R.N.I.- UPHIN/2012/45127 लखनऊ मंगलवार 7 नवम्बर 2023 पृष्ठ – 4 मूल्य–3 रूपया

संक्षिप्त समाचार

कांग्रेस में शामिल हुए रवि वर्मा

नेताजी के बाद सपा में जनता की आवाज उठाने वालों की जगह नहीं : रवि

लखनऊ। सपा के महासचिव व पूर्व सांसद रवि प्रकाश वर्मा आज कांग्रेस में शामिल हो गए। उन्हें कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पार्टी की सदस्यता दिलाई। उनके साथ ही उनकी बेटी डॉ. पूर्वी वर्मा भी कांग्रेसी हो गई। रवि वर्मा ने कहा कि अब सपा समाजवाद के सिद्धांत से भटक गई है। वहां पूंजीवादी व्यवस्था हावी है। हम सबने कठिन परिश्रम करके साइकिल के निशान को प्रदेश के कोने–कोने में पहुंचाया है पर अब सपा में काम करना मुश्किल हो रहा है। नेताजी मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद सपा में मेहनती और जनता की आवाज उठाने वालों के लिए जगह नहीं है इसलिए अब सपा से इस्तीफा दे दिया है और कांग्रेस में शामिल हुए हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि हम सभी का दिल से स्वागत करते हैं। कांग्रेस पार्टी समाज के हर तबके के हितों की रक्षा के लिए काम करती है शनिवार को पूर्व सांसद रवि वर्मा और उनकी बेटी डॉ. पूवी वर्मा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से मुलाकात की।

उत्तर प्रदेश सरकार कराएगी गोवंश की गणना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार गोवंश संवर्धन, संरक्षण के लिए अब तीन श्रेणियों में गोवंश की गणना कराएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आदेश दिया है कि तीनों श्रेणियों में प्राथमिकता के आधार पर गणना कराई जाए। इसके बाद इसकी जियो टैगिंग की जाए। पहले चरण में इन गोवंशों की गणना कराई जाएगी। इसके बाद अगले चरण में इनसे जुड़ी कार्ययोजना बनाकर उस पर कार्य होगा, जिससे गोवंश को समुचित स्थान मिले। सरकार कान्हा उपवन के जरिए गोवंश का संरक्षण कर रही है, लेकिन सड़कों पर घूमने वाले गोवंशों का भी संवर्धन हो और इनकी वजह से आमजन–किसानों को परेशानी न हो। इस पर भी योगी सरकार का पूरा ध्यान है। सरकार की तरफ से बताया गया है कि वर्तमान में 6889 निराश्रित गोवंश स्थलों में 11.89 लाख गोवंश संरक्षित हैं। इनके साथ–साथ गोवंश संरक्षण के लिए संचालित मुख्यमंत्री सहभगिता योजना के भी अच्छे परिणाम मिले हैं।

अब तक 1.85 लाख से अधिक गोवंश इस योजना के तहत गो–सेवकों को सुपुर्द किए गए हैं। निराश्रित गोवंश स्थलों तथा गोवंश की सेवा कर रहे सभी परिवारों को गोवंश के भरण–पोषण के लिए वर्तमान में 30 रुपये प्रति गोवंश की दर से उपलब्ध कराई जा रही धनराशि बढ़ाकर 50 रुपये प्रति गोवंश की गई।

अनाथ बच्चों पर योगी सरकार मेहरबान, मिलेंगे 4,000 रूपए महीना

स्पांसरशिप योजना अनाथ बच्चों के लिए वरदान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में निवास करने वाले आनाथ बच्चों पर सरकार मेहरबान है। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से संचालित स्पांसरशिप योजना के तहत अभी तक सिर्फ 2000 रुपए दिये जाते थे जिन्हें बढ़ाकर अब दोगुना कर दिया गया है। इसी माह

के तहत अब धनराशि 2000 रुपए के स्थान पर 4000 रुपए कर दी गई है। पात्र बच्चों को इसका लाभ मिले इसलिए जागरूकता अभियान चलाने की बात भी कही गई है। स्पांसरशिप योजना का लाभ पाने के लिए आवेदक को कुछ जरूरी डॉक्यूमेंटेशन करना होगा। बच्चा सरकार की गाइडलाइन फॉलो करता है तो संबंधित को स्कीम का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से संचालित स्पांसरशिप योजना के तहत अभी तक सिर्फ 2000 रुपए दिये जाते थे जिन्हें बढ़ाकर अब दोगुना कर दिया गया है। इसी माह से लाभार्थियों को 2 के स्थान पर 4 हजार रुपए प्रतिमाह के हिसाब से मदद की जाएगी। सरकार का उद्देश्य है कि गरीब बच्चों का पालन पोषण ठीक से हो और पढ़ाई में कोई अडचन न आए। विभाग की लोगों से अपील है कि वे जरूरतमंद बच्चों की मदद के लिए उनके अभिभावकों या संरक्षकों को न केवल योजना की जानकारी दें बल्कि उन्हें आवेदन करने के लिए भी प्रेरित करें। स्पांसरशिप योजना के अंतर्गत 18 साल तक के ऐसे बच्चे आते हैं, जिनके पिता की मृत्यू हो गई है या उनकी मां तलाकशुदा महिला है। जिन बच्चों के माता–पिता या उनमें से कोई गंभीर,जानलेवा रोग से ग्रसित है।ऐसे गरीब बच्चों को भी स्कीम का लाभ दिया जाता है। इसके अलावा कानून से संघर्षरत मसलन बाल तस्करी, बाल विवाह, बाल वैश्यावृत्ति, बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति में शामिल बच्चों को भी योजना के लिए पात्र माना गया।दिव्यांग,लापता या घर से भागे हुए बच्चे भी योजना का लाभ ले सकते हैं।माता–पिता या उनमें से कोई एक जेल में है। माता–पिता आर्थिक, शारीरिक या मानसिक रूप से देखभाल के लिए असमर्थ हैं तो भी स्पांसरशिरप योजना का लाभ ले सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार की अधिकतम आय 72 हजार रुपये वार्षिक, साथ ही अन्य क्षेत्रों में अधिकतम आय 96 हजार रुपये वार्षिक पुनर्वास स्पांसरशिप व माता–पिता दोनों अथवा वैध संरक्षक की मृत्यु होने पर परिवार की अधिकतम होना जरूरी है। आधार कार्ड, आय प्रमाणपत्र, आयु प्रमाणपत्र, मृत्यु प्रमाणपत्र, शिक्षण संस्थान में पंजीयन का प्रमाणपत्र आदि प्रमाणपत्र जरूरी है।

एफएम रेडियो चौनल ने अयोध्या के दीपोत्सव में दीये पहुंचाने के लिए शुरू की मुहिम

अयोध्या दीपोत्सव फिर वर्ल्ड गिनीज बुक रिकार्ड में दर्ज होगा : जयवीर

लखनऊ। दीपावली के अवसर पर भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या में दीपोत्सव को भव्य एवं दिव्य बनाने में माई एफ.एम. रेडियो चौनल महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। नेटवर्क के माध्यम से आम लोगों से मिट्टी के दीये लेकर अयोध्या पहुंचायेगा। प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि एफएम रेडियो चौनल वह रेडियो के माध्यम से अयोध्या में दीपदान कर सकते हैं। इस पहल से आम लोगों को अयोध्या से जोड़ने एवं अयोध्या के प्रति लोगों की आस्था सुदृढ़

इसके तहत एफएम रेडियो देशभर से अयोध्या में दीये पहुंचाने के लिए एक मुहिम शुरू की है। इसमें अपने 30 शहरों के रेडियो स्टेशन ने अपने श्रोताओं एवं शुभ चिन्तकों से एक से लेकर एक हजार दीपदान करने का आह्वान किया है। जो श्रोता स्वयं वहां नहीं पहुंच सकते करने के लिए एक सराहनीय प्रयास किया गया है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि पिछले वर्ष दीपोत्सव में इस एफ.एम. चौनल ने करीब 2 लाख से ज्यादा दीये पहुंचाए थे, जो इस बार बढ़ने की उम्मीद है। एफ.एम. रेडियो चौथी बार दीपोत्सव कार्यक्रम में शामिल हो रहा है। उन्होंने बताया कि सात राज्य जहां से दीये अयोध्या पहुंच रहे हैं वे है राजस्थान, गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र, छतीसगढ़, पंजाब और हरियाणा, इन राज्यों के 30 स्टेशन से दीये अयोध्या के जानकी महल में पहुंचेंगे। अयोध्या नगर निगम द्वारा इन दिये को सजावट के लिए दिया जाता है।पर्यटन एवं सस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि यह आयोजन भले सरकार की ओर से किया जा रहा है लेकिन आम लोगों की महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। आयोजन के माध्यम से आयोध्या को विश्व पटल पर एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक तीर्थ नगरी के रूप में स्थापित करने का प्रयास है। उन्होंने उम्मीद जाहिर किया कि इस बार भी दीपोत्सव में एक रिकार्ड बनाते हुए वर्ल्ड गिनीज बुक में दर्ज कराने का प्रयास किया जायेगा।

भयावह स्थिति में पहुंचे प्रदूषण को जनहित में तत्काल नियंत्रित किया जाये

प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री से नागरिकों की खुली अपील

लखनऊ। मान्यवरद्वय! हम समझते हैं कि अपने कार्यक्रमों में अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद आप इस तथ्य से अवगत होंगे कि इन दिनों दिल्ली–एनसीआर एवं राजधानी लखनऊ समेत उत्तर प्रदेश के कई जिलों में वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ गया है। आज के आंकड़े और बड़े हो सकते हैं पर कल रविवार को दिल्ली की वायु गुणवत्ता अत्यन्त गंभीर श्रेणी में पहुँच गई थी। यहाँ की हवा में सामान्य से पाँच गुना प्रदूषण कण व्याप्त हो चुके हैं। दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 450 एक्यूआई से अधिक रहा। एनसीआर सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश का भी यही हाल है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के हालात भी बेहद खराब हैं। लखनऊ का औसत एक्यूआई कल 274 रहा जो शनिवार की अपेक्षा 40 माइक्रोग्राम अधिक है। इस कोहरानुमा हौग से फसलें ही नहीं नागरिक जीवन पर भी व्यापक प्रभाव दिख रहा है। सर्वाधिक पीड़ित बुजुर्ग और बच्चे हैं। श्वान्स, दमा और दिल के मरीजों को अधिकाधिक जोखिम का सामना करना पड़ रहा है। नवजात और नव प्रसूताओं को भी जोखिम उठाने पड़ रहे हैं। मानवजनित इस प्रदूषण को प्रक्रति में बदलाव से संरक्षण मिल रहा है। धनाढ्य लोग चेतना के अभाव और अपने वैभव के घमंड में चूर होकर प्रदूषण को और भी बढ़ा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर क्रिकेट मैच जीतते ही पटाखों के दागने की बाढ़ सी आजाती है। छोटे मोटे त्यौहार जिनका पहले सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं होता था मध्यवर्ग ने पटाखे फोड़ने के अवसर में बदल दिया है। ऐसे अनेक उदाहरण यहां दिये जा सकते हैं। अब पाँच दिनी दीपावली–उत्सव शुरू होने जा रहे हैं और प्रदूषण में भारी वृद्धि होने वाली है। इसकी कीमत वृद्धों, बच्चों, बीमारों ही नहीं उन सबको भी चुकानी है जो पर्यावरण को दूषित करेंगे। हम अपने लिए खुद ही खाई खोद रहे हैं। इस पर नियंत्रण के सरकारी प्रयास जरूरी हैं। आखिर सरकार होती भी इसीके लिए है कि जब अन्य प्रयास विफल हो जाएँ तो सरकारें आगे आयें। अच्छी बात है कि दिल्ली में कुछ कदम उठाए गए हैं। आगे और भी कदम उठाए जाने की जरूरत है। वोटों के लालच में इस मानवीय खतरे की अनदेखी नहीं की जा सकती है। अतएव आपसे जागरूक नागरिकों की अपील है कि पटाखों पर रोक लगायें। सड़कों पर धुआँ फेंकते दौड़ रहे कंडम वाहनों की धर– पकड़ की जाये। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने को इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करने सहित अन्य कदम उठाए जायें। अन्य वैज्ञानिक उपाय भी हैं जिनसे आप भलीभाँति परिचित हैं। परंतु पाँच राज्यों के चुनावों और आगामी लोकसभा के चुनावों की तैयारियों में व्यस्त होने के कारण संभवतः इस ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। एक निवेदन और। सरकार के कतिपय हिस्से और मीडिया प्रदूषण का जिम्मा किसानों पर डालता रहता है। क्रपया ये रोका जाये। अनेक नागरिकों ने मुझसे आग्रह किया कि उनकी इस पीड़ा को सार्वजनिक साधनों से आप तक पहुंचाऊं। अतएव यह अपील जारी कर रहा हूँ। उम्मीद है कि राहतकारी कदम जल्द देखने को मिलेंगे।

मुहम्मद अशफाक की छठी बरसी

अल्लाह का नाम पाक है, पाक रहेगा, बंदा मुश्क खाक है खाक रहेगा : अफाक

लखनऊ। राष्ट्रीय समाजिक कार्य कर्ता संगठन के संयोजक मुहम्मद अफाक ने अपने पिता श्री मुहम्मद अशफाक की छठीं पुण्य तिथि पर कहा कि आज पूरी दुनिया जीवन के लिए संघर्ष कर रही है, लेकिन आज उनके पिता की पुण्य तिथि है। संवेदनाएं दी जा रही हैं, वो मौजूद नहीं हैं, एक दिन ऐसा वक्त आएगा जब हममें से कोई इस दुनिया में नहीं रहेगा. आगे मोहम्मद अफाक ने कहा कि आज दुनिया में आने के बाद अगर हम ये सोचें कि हमें भी दफन होना है. .इसलिए अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ ये गलतियाँ कभी न करें।तो हमारी यहाँ की जिन्दगी भी अच्छी और आखिरत भी अच्छी हो जाएगी। फोन के माध्यम से तमाम राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के नेताओं ने मस्जिदों और मदरसों में मरहूम मोहम्मद अशफाक के लिए मगफिरत की दुआ की. इस शोक कार्यक्रम में हाजी फहीम सिद्दीकी, मुर्तजा अली, मुहम्मद अहमद, सैयद अली मुशीर जैदी, शहजादा मंसूर अहमद, डॉ. आफताब, मौलाना अरशद अहमद, सदर अकबर जफर आदि मौजूद रहे।

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा की बैठक,प्रदेश भर में 2 लाख कार्यकर्ता किए जाएंगे तैयार

लखनऊ, (यूएनएस)। आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं और इस बार विपक्ष के च्व। के दाव को फेल करने के लिए भाजपा लगातार बैठकर कर रही है। आज उत्तर प्रदेश भाजपा मुख्यालय में पिछड़ा मोर्चा की बैठक बुलाई गई। दरअसल यह बैठक जातिवार जनगणना को लेकर बुलाई गई जिसमें पिछड़ी जातियों के बीच पार्टी का जनाधार बढ़ाने की रणनीति पर चर्चा की गई। भारतीय जनता पार्टी का पिछड़ा वर्ग मोर्चा आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर अभी से अपनी जमीन मजबूत करने में लग गया है यही कारण है कि मोर्चा प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 500 नए कार्यकर्ता तैयार कर रहा है। इस हिसाब से प्रदेश में दो लाख नए कार्यकर्ता तैयार करने की योजना है। और मोर्चा कार्यकर्ताओं के चयन का काम इसी महीने पूरा करके उन्हें दिसंबर में आगामी लोकसभा चुनाव में पार्टी के प्रचार के लिए प्रशिक्षित भी करेगा। भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग मोर्चा कि इस बैठक में तैयार किया जा रहे इन 2 लाख नए कार्यकर्ताओं का लोकसभा चुनाव के लिए कैसे समुचित उपयोग किया जाए, उन्हें सरकार की योजनाओं के बारे में किस तरीके से जानकारी दी जाए और सोशल मीडिया पर कैसे एक्टिव रहा जाए इन सब चीजों को लेकर आज इस बैठक में चर्चा की गई। इसके साथ ही पिछड़ा मोर्चा अगले महीने से उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जनपदों में ओबीसी सम्मेलन आयोजित करने की तैयारी भी कर रहा है। लोकसभा चुनाव से पहले लगातार विपक्ष जातिगत जनगणना की मांग को तेज करते जा रहा है जिसको लेकर भाजपा अब नए सिरे से रणनीति तैयार करने में जुड़ गई है यही कारण रहा की भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने पिछले हफ्ते दिल्ली बीजेपी पार्टी मुख्यालय में विभिन्न राज्यों में पिछड़ा वर्ग भाजपा नेताओं के साथ बैठक की थी। इस बैठक में तय हुआ था कि पिछड़ों के बीच जनाधार बढ़ाने के लिए प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इन सम्मेलनों की रूपरेखा और उनके आयोजन की तैयारियों को लेकर भी बैठक में चर्चा होने की संभावना है। पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री नरेंद्र कश्यप ने बताया कि ओबीसी वर्ग भारतीय जनता पार्टी के साथ कदम से कदम मिलाकर उस लक्ष्य को जो लक्ष्य पार्टी ने तय किया है उत्तर प्रदेश में सभी सीटों को जीतने के लिए, ओबीसी समाज के हर घर तक दशक देने वाला है। नवंबर के महीने में हम प्रदेश के सभी जनपदों में सोशल मीडिया की वर्कशॉप करके नए कार्यकर्ताओं को परिपक्व करेंगे। इसके साथ ही दिसंबर महीने में मोर्चे में हम सम्मेलन करेंगे और प्रयागराज में ओबीसी महाकुंभ भी करेंगे। पिछड़ा वर्ग मोर्चा दिसंबर अंत या अगले वर्ष जनवरी में प्रयागराज में ओबीसी महाकुंभ के आयोजन की भी तैयारी कर रहा है। आगामी लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत पिछड़ी जातियों के बीच पैठ बनाने के लिए पिछड़ा वर्ग मोर्चा इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म का व्यापक तौर पर उपयोग करेगा। इसके लिए मोर्चा कार्यकर्ताओं का प्रदेश व क्षेत्र स्तरीय प्रशिक्षण हो चुका है। नवंबर में जिला स्तर पर प्रशिक्षण देने की तैयारी है।

यूपी में 20 हजार 353 पहुंचा डेंगू का आंकड़ा

रिटायर्ड आईएएस एनएस रवि की डेंगू से मौत, लखनऊ, कानपुर में अभी भी सबसे ज्यादा मरीज

लखनऊ। यूपी में डेंगू का अटैक जारी हैं। प्रदेशभर में 15 मई से अब तक 20 हजार 353 नए मरीज सामने आए हैं। इनमें से सबसे ज्यादा मरीज लखनऊ और कानपुर में हैं। सबसे ज्यादा बिगड़े हालात राजधानी लखनऊ में हैं। यहां 24 घंटे में 37 नए केस मिलने के साथ ही इस सीजन में अब तक 1855 संक्रमित मिले हैं। वही कानपुर में कुल 1301 संक्रमित हैं। इसके अलावा वेस्ट यूपी के भी कई जिलों में डेंगू के मामलों में लगातार इजाफा जारी हैं। इस बीच लखनऊ में डेंगू से 1984 बैच के आईएएस अधिकारी नेपाल सिंह रवि की डेंगू से मौत की खबर हैं। हालांकि स्वास्थ्य विभाग डेथ ऑडिट के बाद ही डेंगू से मौत की पुष्टि करने की बात कह रहा हैं। इससे पहले पिछले गुरुवार को लखनऊ में डेंगू से 3 लोगों की मौत हो गई थी। इसमें एक 6 साल का मासूम भी शामिल था। लखनऊ सीएमओ डॉ. मनोज अग्रवाल ने बताया कि करीब 11 दिन पहले रिटायर्ड आईएएस एनएस रवि को गोमती नगर विस्तार के टेंडर पाम हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। वो डेंगू पॉजिटिव थे, और इसी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। तबियत बेहद नाजुक थी। सोमवार सुबह उनका निधन हो गया। हालांकि अभी डेथ ऑडिट किया जाना बाकी हैं। मौत के पीछे की असल वजह तभी सामने आ पाएगी। विशेषज्ञों की माने तो डेंगू

उन मरीजों के लिए मारक साबित हो रहा हैं, जो दूसरी, तीसरी या चौथी बार चपेट में आए हैं। गंभीर मरीजों में किडनी और लिवर फेल हो रहे हैं। मरीज को वेंटिलेटर पर रखने के बाद भी जान बचाना मुश्किल साबित हो रहा हैं। एसजीपीजीआई के निदेशक डॉ.आरके धीमन ने बताया कि डेंगू के मामलों में आई तेजी अब कमजोर पड़ रही हैं। हालात में थोड़ा सुधार हो रहा हैं पर अभी भी सतर्कता जरूरी हैं। डेंगू पॉजिटिव आने के बाद यदि शरीर में पानी की कमी होगी तब मरीज की हालत बिगड़नी तय हैं। गंभीर रोगियों में मल्टीपल ऑर्गन फेल यानी शरीर के कई अंग फेल होने का खतरा रहता हैं। ऐसे मरीजों की लिवर, लंग्स और किडनी डैमेज हो सकती हैं। इस बीच डेंगू ब्रेन पर भी अटैक कर सकता हैं। ऐसे समय वेंटीलेटर की जरूरत पड़ती हैं।

देव दीपावली पर 5 लाख पर्यटकों के आने की उम्मीद

वाराणसी। काशी की देव दीपावली में लाखों की संख्या में पर्यटकों के आने की उम्मीद है। इसे देखते हुए काशी को अभेद्य किला बनाने की कवायद अभी से शुरू कर दी गई है। काशी के 84 घाटों को 9 जोन, 11 सेक्टर और 32 सब सेक्टर में बांट कर सुरक्षा–व्यवस्था का पूरा खाका तैयार कर लिया गया है। अधिकारियों ने नाविकों के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा–निर्देश दिए हैं। वाराणसी के पुलिस कमिश्नर मुथा अशोक जैन और जिलाधिकारी एस राजलिंगम ने बताया कि काशी में देव–दीपावली के दौरान 7 घाटों पर सबसे ज्यादा भीड़ उमड़ने की संभावना है। इनमें अस्सी घाट, दशाश्वमेध घाट, अहिल्याबाई घाट, राजघाट, चेतसिंह घाट, नमो घाट और पंचगंगा घाट शामिल है।

घाटों की सुरक्षा के लिए पहले से ही पूरा प्लान वाराणसी कमिश्नरेट पुलिस ने तैयार कर रखा है। साथ ही घाटों से लगने वाली संकरी गलियों में भी बड़े स्तर पर फोर्स का डिप्लॉयमेंट किया जाएगा। इसके अलावा अत्यधिक भीड़ वाले घाटों पर क्यूआरटी की 20 टीमें तैनात रहेंगी। साथ ही 11 विशेष टीम लाउडहेलर के साथ घाटों पर पेट्रोलिंग के लगाई जाएंगी। इतना ही नहीं काशी के 17 प्रमुख घाटों पर एंटी रोमियो स्क्वॉड की टीमें भी होंगी। साथ ही साथ हर घाट पर महिला पुलिसकर्मियों की टीम भी मौजूद रहेगी। इसके अलावा 16

गोताखोर का दस्ता नदी में डूबने से बचाव के लिए उपलब्ध रहेगा। महिलाओं की सुरक्षा के लिए 11 पिंक बूथ होंगे। 7 स्थानों राजघाट, नमोघाट, रामनगर के हनुमान मंदिर, बंगाली टोला इंटर कॉलेज, डुमराव बाग, गोदौलिया चौराहा और रामापुरा चौराहा पर इंटीग्रेटेड इमरजेंसी हेल्पडेस्क भी स्थापित किये जाएंगे। इनमें चिकित्सा, पुलिस, ट्रैफिक, फायर ब्रिगेड, संचार कर्मी और खोया पाया के लिए सहायता कर्मी भी होंगे। देव दीपावली पर पर्यटकों को घाटों के दिव्य–भव्य नजारे को दिखाने के लिए गंगा में लगभग 1200 नौकाएं संचालित होंगी। इसे लेकर नाविकों के साथ पहले ही बैठक पूरी कर ली गई है और उन्हें आवश्यक दिशानिर्देश भी दिए गये हैं। इसके अलावा भीड़ प्रबंधन के लिए शहर के पांच स्थानों पर मजबूत बैरिकेडिंग की जाएगी।

सम्पादकीय

टूट रहे हैं प्रदूषण के सारे रिकॉर्ड, सांस लेना हो रहा दुश्वार, सरकार दिख रही लाचार

दिल्ली–एनसीआर की हवा में दीवाली से कुछ दिन पहले ही इस कदर जहर घुल चुका है और हवा इतनी दमघोंटू हो चुकी है कि लोगों को न केवल सांस लेना मुश्किल हो गया है बल्कि अन्य खतरनाक बीमारियों का खतरा भी बढ़ रहा है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार इस साल अक्तूबर में दिल्ली में प्रदूषण का स्तर 2020 के बाद सबसे खराब स्तर पर था लेकिन नवम्बर की शुरुआत से ही प्रदूषण के सारे रिकॉर्ड टूट रहे हैं और दिल्ली में एक प्रकार से सांसों का आपातकाल–सा दिखाई दे रहा है, जहां चारों स्मॉग की घनी चादर छाई है। यह चादर कितनी खतरनाक है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सूर्य की तेज किरणें भी इस चादर को नहीं भेद पा रही हैं। करीब एक सप्ताह से देश के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की वायु गुणवत्ता सूचकांक में तेजी से गिरावट आई है। इस तरह की वायु गुणवत्ता को सेहत के लिए कई प्रकार से बेहद खतरनाक माना जाता है। दिल्ली के कई हिस्सों में तो वायु गुणवत्ता सूचकांक 800 के आंकड़े को भी पार कर चुका है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से कई गुना ज्यादा है। विशेषज्ञों के मुताबिक अभी अगले 15–20 दिनों तक यहां ऐसी ही स्थिति बनी रह सकती है।

वैसे तो दिल्ली के साथ–साथ देश के कई अन्य राज्यों में भी प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है और देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई में भी वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में दर्ज की जा रही है लेकिन दिल्ली पिछले कई वर्षों से दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक बनी हुई है, जिसका सीधा–सा अर्थ है कि करीब 3.3 करोड़ लोगों में वायु प्रदूषण के कारण होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं का गंभीर जोखिम बना हुआ है। लोगों की सांसों पर वायु प्रदूषण का खतरा इतना खतरनाक होता जा रहा है कि वैज्ञानिक अब दिल्ली में साल–दर–साल बढ़ते प्रदूषण के कारण बढ़ रहे स्वास्थ्य संबंधी गंभीर दुष्प्रभावों को लेकर चिंता जताने लगे हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अधिकारियों के मुताबिक आने वाले कुछ दिनों में दिल्ली–एनसीआर में वायु गुणवत्ता बहुत खराब रहेगी, जिसका कारण तापमान में कमी और पराली जलाने से होने वाला उत्सर्जन है। केंद्र सरकार के डिसीजन सपोर्ट सिस्टम फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (डीएसएस) ने पराली जलाए जाने की गतिविधियों में वृद्धि की आशंका जताई है, जिससे अगले कुछ दिनों में वायु गुणवत्ता बेहद खराब होने की आशंका है। चिंता का विषय यह है कि हर साल दिल्ली सहित, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश इत्यादि राज्यों में इस सीजन में खेतों में बड़े स्तर पर पराली जलाई जाती है, जिसके चलते प्रदूषण का यही आलम देखने को मिलता है। यह बेहद चिंता की बात है कि किसानों से खेतों में पराली नहीं जलाए जाने के निरंतर अनुरोधों के बाद भी इस बार दशहरे के मौके पर तो जैसे किसानों में पराली फूंकने की होड़–सी लगी दिखी, वहीं करवा चौथ के मौके पर चांद के दीदार होते ही दिल्ली तथा पड़ोसी राज्यों में लोगों जमकर आतिशबाजी की, जिसने प्रदूषण की स्थिति को और विकराल बनाने में आग में घी का काम किया।

विकास के नाम पर अनियोजित तथा अनियंत्रित निर्माण कार्यों के चलते बिगड़ते हालात, खेतों में जलती पराली, खतरों को जानते–समझते हुए भी की जाने वाली भारी आतिशबाजी तथा वाहनों और औद्योगिक इकाईयों के कारण अत्यधिक प्रदूषित हो रहे वातावरण के भयावह खतरों को हम इसी प्रकार साल–दर–साल झेलने को विवश हैं। हालांकि पर्यावरण तथा प्रदूषण नियंत्रण के मामले में देश में पहले से ही कई कानून लागू हैं लेकिन उनकी पालना कराने के मामले में पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण विभाग में सदैव उदासीनता का माहौल देखा जाता रहा है। देश की राजधानी दिल्ली तो वक्त–बेवक्त 'स्मॉग' से लोगों का हाल बेहाल करती रही है। न केवल दिल्ली–एनसीआर में बल्कि देशभर में वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण का खतरा निरन्तर मंडरा रहा है। वायु, जल तथा अन्य प्रदूषण के कारण अब हर साल देशभर में लाखों लोग जान गंवाते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक मानव निर्मित वायु प्रदूषण के ही कारण प्रतिवर्ष करीब पांच लाख लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं।

अब देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जहां लोग धूल, धुएं, कचरे और शोर के चलते बीमार न हो रहे हों। देश के अधिकांश शहरों की हवा में जहर घुल चुका है। पयार्वरण तथा मानवाधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत डेविड आर. बॉयड का कहना है कि विश्वभर में इस समय छह अरब से भी ज्यादा लोग इतनी प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं, जिसने उनके जीवन, स्वास्थ्य और बेहतरी को खतरे में डाल दिया है और सर्वाधिक चिंता की बात यह है कि इसमें करीब एक–तिहाई संख्या बच्चों की है। अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने विस्तार से बताया है कि वायु प्रदूषण न केवल फेफड़ों को बल्कि स्वास्थ्य को तमाम अन्य तरीकों से भी प्रभावित करता है। हवा की खराब गुणवत्ता के कारण अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, और बैक्टीरियल संक्रमण के खतरे बढ़ सकते हैं। वायु की खराब गुणवत्ता व्यक्ति में ऑटिज्म, तनाव और स्ट्रोक जैसे तमाम न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर सहित अन्य बीमारियों को भी बढ़ावा देती हैं वायु प्रदूषण के कारण हवा में कई प्रकार की हानिकारक गैसें सम्मिलित हो जाती हैं, जिनसे सिरदर्द, खांसी, जुकाम और एलर्जी जैसी आम समस्याएं भी देखने को मिलती हैं। पर्यावरण, प्रदूषण और स्वास्थ्य पर विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के भयावह खतरों के बारे में विस्तार से जानने के लिए 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक को फ्लिपकार्ट https:@@www-flipkart-com@p radushan&mukt &saansein environment n a t u r e @ p @ i tmcc9af5e2b2adf\pid =9788193716816 से प्राप्त किया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायु प्रदूषण के चलते दुनियाभर में प्रतिवर्ष करीब 70 लाख लोगों की असामयिक मृत्यु हो जाती है, जिनमें करीब छह लाख बच्चे भी शामिल होते हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक वातावरण में बढ़ रहा वायु प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य के लिए काफी समस्यादायक स्थिति पैदा कर सकता है, जिससे रेसपिरेटरी, न्यूरोबिहेवियरल, कार्डियोवैस्कुलर तथा इम्यून सिस्टम से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट शिकागो (ईपीआईसी) के निदेशक और अर्थशास्त्र के प्रोफेसर माइकल ग्रीनस्टोन तथा उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन के बाद कुछ समय पहले कहा जा चुका है कि भारत की कुल आबादी का बड़ा हिस्सा ऐसी जगहों पर रहता है, जहां पार्टिकुलेट प्रदूषण का औसत स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से ज्यादा है। देश में करीब 84 फीसदी व्यक्ति ऐसी स्थानों पर रहते हैं, जहां प्रदूषण का स्तर भारत द्वारा तय मानकों से अधिक है और भारत की एक चौथाई आबादी बेहद प्रदूषित वायु में जीने को मजबूर है। चूंकि वायु प्रदूषण का प्रभाव मानव शरीर पर इतना घातक होता है कि सिर के बालों से लेकर पैरों के नाखून तक इसकी जद में होते हैं, इसीलिए शिकागो विश्वविद्यालय के माइकल ग्रीनस्टोन कहते हैं कि वायु प्रदूषण पर अब गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है ताकि करोड़ों–अरबों लोगों को अधिक समय तक स्वस्थ जीवन जीने का हक मिल सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवता के लिए खतरा

ब्रिटेन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सम्मेलन में वैश्विक स्तर पर नियंत्रण विहीन कृत्रिम बुद्धिमत्ता से दुनिया के लिए भारी खतरा उत्पन्न होने की शंका जताई गई है। इससे लोगों की गोपनीयता तो खत्म होगी और इंसानी जीवन पर खतरा मंडराने लगेगा। सबसे खास बॉत यह कि आज बेरोजगारी की समस्या से दुनिया जुझ रही है। ऐसे में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बेरोजगारी बढाने के साथ सुरक्षा, राजनैतिक, शैक्षिक एवं संवेदनशील मुद्दों पर अनावश्यक हस्तक्षेप करेगा। वैसे तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। इसके जरिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस है। ब्रिटेन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से जुड़े जोखिमों और प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के नेतृत्व में उनसे निपटने के तरीकों पर विचार–विमर्श करने के लिए 100 से ज्यादा विश्व नेता, तकनीकी दिग्गज, शिक्षाविद और शोधकर्ता ने एआई से उपजने वाले सम्भावित वाले खतरों से निपटने की योजना पर एक राय दी है। तय यह हुआ है कि सरकारें एआई तकनीक कायदे कानून के अनुसार विकसित करें। इस बॉत पर भी चिन्ता जताई गई कि अगर निजी कंपनियों में एआई के विकास को लेकर खुली प्रतिस्पर्धा छिड़ी तो यह मानवता के लिए नुकसान देह साबित होगा। वैसे भी वैश्विक बोस बनने की सनक में कई राष्ट्र दूसरे राष्ट्रो के जानी दूश्मन बनते जा रहे है।

हाल की एक रिपोर्ट में यूके सरकार ने एआई के कुछ चिंताजनक संभावित खतरों को सूचीबद्ध किया है, जिनमें जैव–आतंकवाद, साइबर हमले और बाल यौन शोषण की डीपफेक इमेज शामिल हैं। इतना ही नही एआई में कई नौकरियों को एक साथ करने की क्षमता है जो आज के समय में मानव द्वारा की जाती हैं। इससे बड़े पैमाने पर नौकरी खत्म हो सकती है और बेरोजगारी बढ़ सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जो दिमाग वाले काम पर बहुत अधिक निर्भर हैं। एआई केवल उतना ही निष्पक्ष हो सकता हैं जितना कि उसके डेटा को प्रशिक्षित किया जाता है. यदि डेटा में निष्पक्षता का पैटर्न हैं तभी एआई भी पक्षपातपूर्ण और भेदभावपूर्ण होगा। यह समस्या राजनीतिक, शैक्षिक एंव सवेंदनशील मुद्दो पर बहुत ज्यादा असर डालती है क्योकिं ऐसे भेदभाव से भरे बयान दंगो का कारर्ण बन सकते हैं। एआई सिस्टम साइबर हमलों और हैकिंग के प्रति सेंसेटिव हैं. यदि एआई सिस्टम में छेड़छाड़ की जाती है, तो इससे बहुत सा डेटा लीक हो सकता है, जिससे आम जनता को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। एआई सिस्टम के हल जटिल और समझने में कठिन हो सकते हैं. जिससे आपको इसमें मौजूद कमियां या सिस्टम से हुई गलती की पहचान करना मुश्किल हो जाता है , इसलिए यह कभी दृ कभी किमती समय खराब करता है। एआई–संचालित हथियार मानव जीवन को महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचा सकते है, जिसका हाल ही अभी एक केस यूस.एस एयर फोर्स का भी आया जिसमें एआई ने अपने ही ऑपरेटर को मौत के घाट उतार दिया। इसलिए यह तय करना बहुत जरूरी है कि एआई का उपयोग ऐसे हथियार बनाने के लिए किया जाना चाहिए जो मानव को नुकसान न पहुंचा पायें। हालांकि आपको यह तय करना जरूरी है कि एआई के जोखिमों को कम करने और फायदों को अधिक करने पर ध्यान देने के साथ एक जिम्मेदार और नैतिक तरीके से विकसित और प्रयोग किया जाए। इसके लिए सरकारों, कारोबारियों और जनता के बीच सहयोग की आवश्यकता होगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एआई का उपयोग इस तरह से किया जाए जिससे पूरे समाज को लाभ हो।

विश्व के पहले आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सुरक्षा शिखर सम्मेलन ब्रिटेन के बकिंघम में यूनियन कौशल विकास और उद्यमिता और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने भारत की तरफ से सुरक्षा, विश्वास और जवाबदेही पर विशेष ध्यान देने के साथ एआई के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। मंत्री ने कहा कि इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बेहद महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हम एक ऐसे युग में प्रौद्योगिकी के भविष्य को आकार देने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जहां यह मानव जाति के लिए अब तक के सबसे रोमांचक अवसरों में से कुछ पेश कर रहा है।मंत्री ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, भारत की पहले से ही तेज और विस्तारित हो रही डिजिटल अर्थव्यवस्था, विकास और शासन का एक गतिशील प्रवर्तक है। उन्होंने कहा कि हम एआई को खुलेपन, सुरक्षा, विश्वास और जवाबदेही के चश्मे से देखते हैं। मंत्री ने आगे कहा कि एआई का उपयोग केवल भलाई के लिए, सभी देशों में हमारे सभी नागरिकों की प्रगति और समृद्धि के लिए किया जाना चाहिए। दो दिवसीय शिखर सम्मेलन का उद्देश्य एआई से जुड़े जोखिमों पर विचार–विमर्श करना, विशेष रूप से इसके विकास के अत्याधुनिक स्तर पर, और विश्व स्तर पर समन्वित प्रयासों के माध्यम से उनके शमन के लिए रणनीतियों की खोज करने के लिए प्रमुख एआई निगमों, नागरिक समाज संगठनों और यूके, यूएस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, आयरलैंड, इटली, केन्या के अनुसंधान विशेषज्ञों सहित दुनिया भर के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं।

ब्रिटेन में दो दिवसीय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) शिखर सम्मेलन में दुनिया के पहले एआई सुरक्षा संस्थान के निर्माण के साथ समाप्त हो गया। एआई सुरक्षा संस्थान जी–7 देशों के भीतर पहला टास्क फोर्स बन गया है।टास्कफोर्स के एक्सटर्नल एडवायजरी बोर्ड में राष्ट्रीय सुरक्षा से लेकर कंप्यूटर विज्ञान तक के कई दिग्गज होंगे, जो नए वैश्विक केंद्र को सलाह देंगे। संस्थान का इरादा एआई माडल की संभावित हानिकारक क्षमताओं से निपटने के लिए नए प्रकार के एआई उपक्रम का सावधानीपूर्वक परीक्षण करना है।एआई सेफ्टी समिट में ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक और टेस्ला के सीईओ के बीच बातचीत में एलन मस्क ने एक दिलचस्प बात कही। उन्होंने कहा भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट्स यानी इंसान के काम को करने के लिए डिजाइन किए गए रोबोट्स इंसानों का हर जगह पीछा करेंगे। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा आएगा जब लोगों को नौकरी करने की जरूरत नहीं होगी।दुनिया के भविष्य के लिए उभरते जोखिमों में जलवायु परिवर्तन, युद्ध और अन्य अनिश्चितताओं के बीच एक नया खतरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) है। इंश्योरेंस कंपनी एएक्सए की फ्यूचर रिस्क रिपोर्ट 2023 के अनुसार पिछले साल की तुलना में एआइ 10 अंकों की छलांग लगाते हुए इस वर्ष दुनिया की चौथी सबसे बड़ी चिंता बन गया है। विशेष रूप से जेनरेटिव एआइ के तेजी से विकास ने इस खतरे को और बढ़ाया है। वैश्विक स्तर पर अधिकांश विशेषज्ञों 64 प्रतिशत और जनता 70 प्रतिशत का तो यह भी मानना है कि एआइ संबंधी रिसर्च को रोक दिया जाना चाहिए। अनुमान है कि एआइ का विकास मनुष्यों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर सकता है। सभी जानते है कि दुनिया में अभी भी काफी देश ऐसे है जिनकों इंटरनेट या आधुनिक तकनीक का उतना फायदा नही हुआ जितना होना चाहिए था। कई देश इंटरनेट के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हाईस्पीड वाले देश सउदी अरब, साउथ कोरिया, आस्टेलिया और कनाड़ा जैसे देशों को इसका बेहतर फायदा होगा। इसी तरह कम्प्यूटर तकनीक में अग्रणी देश कनाड़ा, अमेरिका, आस्टेलिया, जर्मनी, सिंगापुर, स्विटजरलैण्ड ओरी चीन जैसे देशों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में काम करना अन्य देशों की अपेक्षाकृत सरल होगा। ऐसे में चंद देशों को तकनीकि उपलब्धता को फायदा मिलेगा। ऐस में कुछ देश एआई जैसी तकनीक पर शिंकजा कसना चाहेगें। इसलिए बेहतर यही होगा कि जरूरत के हिसाब से एआई तकनीक के क्षेत्र में काम करने के लिए एक मानक, नियम कायदे और इन पर नियंत्रण रखने पारदर्शी व्यवस्था की दरकार होगी।

संस्कार और संस्कृति का परिचायक है दीपक

भारतीय संस्कृति में दीपक की महिमा अपरम्पार है इसलिए दीपक को जीवन की प्रकाश परम्परा व तमसो मां ज्योतिर्गमय की आकांक्षा का आधार स्तंभ भी माना गया है। भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में ऋग्वेद के अनुसार दीपक की उत्पत्ति सूर्य से मानी गयी है। हमारे शास्त्रों में यूं भी नौ प्रकार की पूजा–अर्चना का विधान है, जिसके तहत दीप पूजा व दीपदान को श्रेष्ठ माना गया है। प्राचीनकाल से ही भारतीय परंपरानुसार किसी भी शुभ कार्य के आरंभ में दीपक प्रज्ज्वलित किया जाता है। जलता हुआ दीपक हमारे जीवन का साक्षी होता है।

हमारे देश में तीज–त्योहारों में मांगलिक अवसरों पर सर्वप्रथम दीपक जलाकर विभिन्न उत्सव मनाये जाते हैं। दीपक की प्रज्ज्वलित लौ प्रकाश की रश्मियां बिखेरकर अंधकार को दूर करती हैं व हमें जनजीवन का सन्देश देती हैं। जलता हुआ दीपक मनुष्य की प्रगति तथा खुशियों का पर्याय माना जाता है। जहां दीपक हमारी आस्था और मानवीय संवेदनाओं का प्रतीक है, वहीं यह टिमटिमाते तारों के प्रकाश से भी प्रेरणा लेने का आह्वान करता है। भारतीय संस्कृति में दीपक को तो साक्षात् सूर्य व अग्नि का द्योतक माना गया है।

मनुष्य के जीवन में दीपक का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। प्राचीन लोकमान्यताओं के आधार पर भी इस बात को बल मिलता है कि प्राचीन सभ्यताओं में भी लोगों में दीपावली की भांति त्योहारों को मनाये जाने का प्रचलन रहा, जिनमें दीपक को प्रमुखता दी गयी है। प्राचीन सभ्यता के तहत मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की खुदाई में कई प्रकार के दीपक मिले हैं, यहां तक कि मानव सभ्यता के विकास क्रम में भी कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं, जिनमें नगरों को प्रकाशमान करने के लिए सहस्त्रों की संख्या में सूर्यास्त होते ही दीपक जला दिये जाते थे। भारत में दीपक का उद्भव पांच हजार वर्ष पूर्व माना गया है। यह दीपक आकार में कोने मुड़े हुए चौकोर आकृति के थे। हड़प्पा की सभ्यता में खुदाई के दौरान गोल आकार के दीपक मिले थे। मोहनजोदडों में मिली विभिन्न देवियों की प्रतिमाओं की केश लड़ों में दोनों ओर दीपक बने हुए पाये गये हैं मोहन जोदड़ों शहर के मुख्य मार्गों के दोनों ओर दीपक जलाने के विशाल गढाईदार द्वार कलात्मक रूप में पाये गये हैं। आलों व ताखों में घरों में दीपक जलाने की परंपरा रही है। भारत के कुषाण वंश के दौरान पाये गये गोल दीपक काफी गहराई के होते थे। इन दीपकों के सिरे बाती रखने हेतु मुड़े हुए होते थे। रोम व यूनान की सभ्यता व संस्कृति में नाव के आकार के दीपक होते थे। उनके छेदों में बाती निकालकर तेल भरकर जलाया जाता था। आजकल बनने वाले विभिन्न प्रकार के दीपक गुप्तकाल की तरह के हैं। मुगलकाल में भी विशेष प्रकार के दीपक बनते थे, जिसे किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता था।

प्राचीन गंधार काल में भगवान बुद्ध के समय में कटोरीनुमा दीपक बनाये जाते थे। दीपक भले ही किसी भी सभ्यता व संस्कृति में विभिन्न आकार व प्रकार के बनते रहे हों, लेकिन हर काल में ये प्रकाश के प्रतीक ही माने गये हैं। भारतीय संस्कृति में दीपकों के साथ कुछ ऐसी मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं जो शकुन और अपशकुन को बलवती करती हैं।कहा जाता है कि यदि जलता हुआ दीपक हवा से या हाथ से गिरकर बुझ जाता है तो इसे बुरा माना जाता है। यहां तक कि दीपक बुझा दो कहना भी अशुभ है। हमारे शास्त्रों में इस प्रकार के विधान का उल्लेख मिलता है कि यदि भोजन के वक्त दीपक बुझ जाये तो अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। पुराणों में तो यहां तक तर्क दिया गया है कि जलते दीपक को फूंक मारकर बुझाने वाला व्यक्ति नर्क में जाता है व अगले जन्म में जन्मांध पैदा होता है। संसार में जितने भी अन्धे, मूक, बधिर, निर्धन व बुद्धिहीन व्यक्ति जन्म लेते हैं तो उनके बार में कहा गया है कि उनका कृत्य जलते हुए दीपकों का बुझाना माना गया है। दीपक की ज्योति का रंग भी हमारे जीवन में शुभ–अशुभ को दर्शाता है। शास्त्र विधानों में श्वेत ज्योति अहम् का सर्वनाश करती है व श्याम वर्ण ज्योति मृत्यु का संकेत देती है तो अत्यंत लाल ज्योति सुख प्रदान करती है। इस तरह कोरी ज्योति लक्ष्मी के आने का आभास देती है। हमारे धर्मग्रन्थों में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि दीपक सदैव पवित्र व धार्मिक स्थलों पर जलाये जायें। जहां तक हो सके शुद्ध घृत से दीपक जलायें। घी की ज्योति से नेत्र रोगमुक्त होते हैं तो महुए के तेल से जलता दीपक सौभाग्य प्रदान करता है। तिल व सरसों के तेल से दीपक जलाने से रोग व अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। कार्तिक मास में दीपक जलाने से कई जन्मों का पुण्य प्राप्त होता है। दीपदान जमीन पर करने की बजाय वृक्षों, जलाशयों व नदियों में केले के पत्तों पर रखकर किया जाना चाहिए। हिन्दू संस्कृति में दीपक को इतना महत्व दिया गया है कि यहां दीपकों का निर्माण करने वाले कुम्हारों ने भी विभिन्न प्रकार के दीपकों का निर्माण कर उसके आकार प्रकार से उसके सौंदर्य को बढ़ावा दिया है। दीप संरचना की परम्परा में सोलह प्रकार के दीपक बनाने का विधान है। धीरे–धीरे दीपकों के स्वरूप व इसकी आकृतियों में काफी परिवर्तन आ गये हैं, लेकिन आज भी ग्रामीण परिवेश में मिट्टी के चौड़े मुंह के कटोरेनुमा दीपक को ही जलाने की परम्परा है। हालांकि भौतिकवादी संस्कृति व महंगाई ने तेल के दीपकों पर बंदिश अवश्य लगायी है, लेकिन फिर भी भारत में गरीब से गरीब व्यक्ति भी दीपावली पर मां लक्ष्मी की आराधना व उसमें आस्था व्यक्त करने के लिए एक छोटा सा दीपक अपनी कुटिया में अवश्य ही जलाता है। साथ ही तमसो मां ज्योतिर्गमय का अहसास अपने जीवन में कर स्वयं को धन्य समझता है। कुल मिलाकर दीपक की बढ़ती लौ हमें सदैव आगे बढने की सदियों से प्रेरणा देती आ रही है, जिसके उजियारे में उज्ज्वल भविष्य की ही आस में चिरकाल से हम बैठे हैं।

दरिद्रता दूर करते हैं दीपक

उल्लास, प्रकाश व ज्ञान के प्रतीक दीपक को सभी मांगलिक कार्यों में अनिवार्य बताया गया है। पहला दीपक कैसे और किसने जलाया होगा, यह बता पाना कठिन है, लेकिन इसकी महत्ता और महिमा को सभी ने स्वीकारा है। दीपक दुष्टात्माओं के लिए काल तथा संतात्माओं का संबल बताया गया है। समय और काल के अनुसार दीपक भिन्न रूप और आकार लेते रहे हैं। इतिहास में सबसे पहले दीपक मिट्टी के ही पाए गए। ये मिट्टी के दीपक रामायण और महाभारत काल में स्वर्णदीप' और रत्नदीप' में परिवर्तित हो गए। दीपक में बाती रखने के लिए उसमें एक तरफ हाथ से दबाकर स्थान बना दिया जाता था। शुरू में बाती सूखी घास की बनाकर डाली जाती थी। लेकिन बाद में दीपक और बाती के बारे में समुचित व्यवस्थाएं बनीं। श्भविष्यपुराण' में वर्णित है कि सूर्य देवता के लिए जलाए जाने वाले दीपक में लाल कपड़े की बाती उपयोग करना चाहिए। यह बाती या वर्तिका श्पूर्णवर्तिका' कहलाती है। विष्णु के समक्ष पीत वस्त्र से निर्मित वर्तिका वाला दीपक जलाया जाता है। यह वर्तिका श्भोगवर्तिका' कहलाती है। इसी प्रकार भगवान शिव के लिए निर्मित श्वेत वस्त्र की वर्तिका श्ईश्वरवर्तिका' कहलाती है। गौरी के लिए निर्मित कुसुम रंग वाली वर्तिका श्सौभाग्यवर्तिका' तथा दुर्गा के लिए लाल रंग के समान रंग वाले वस्त्र से निर्मित वर्तिका श्पूर्णवर्तिका' कहलाती है। इसी प्रकार से ब्रह्मा के लिए जलाए जाने वाले दीपक की वर्तिका श्पद्यवर्तिका' नागों के लिए प्रदत्त वर्तिका श्नागवर्तिका' तथा ग्रहों के लिए श्गृहवर्तिका' कहलाती है। दीपक सदैव घी अथवा तेल का ही जलाना चाहिए। पूजा स्थल अथवा मंदिर में लेपन के बाद मंडल बनाकर घृतदीप जलाने से नेत्ररोग नहीं होता। महुए का तेल वाला दीपक जलाने से सौभाग्य प्राप्त होता है। तिल के तेल वाला दीपक जलाने से सूर्यलोक प्राप्त होता है। सरसों के तेल का दीपक शत्रु पर विजय प्राप्त कराता है। इसी प्रकार विभिन्न तेलों के दीपक भिन्न–भिन्न फलदायी बताए गए हैं।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में दीपक जलाना अनेक प्रकार से लाभकारी बताया गया है। यूं तो बारहों महीने दीपक जलाने के भिन्न–भिन्न लाभ हैं, लेकिन पुराणों में कार्तिक माह में दीपक जलाने का विशेष उल्लेख मिलता है। कार्तिक के महीने में दीपक घर, मकान, मंदिर, चौराहों आदि स्थानों पर रखने तथा धन–धान्य की देवी लक्ष्मी की स्तुति करने से दरिद्रता नष्ट होती है। दीपावली के अवसर पर जलने वाले दीपकों को दीपलक्ष्मी' के नाम से जाना जाता है। पूजा के समय लक्ष्मी की प्रतिमा के चारों ओर दीपक रखे जाते हैं। इसी कारण इन दीपों को दीपलक्ष्मी' या लक्ष्मीदीप' कहते हैं। घरों में महिलाएं पूजा स्थल पर जो दीप रखती हैं, वह अर्चना–दीप' या आरतीदीप' कहलाता है। मंदिरों में रखा जाने वाला दीप श्गर्भदीप' कहलाता है। हमारे यहां भूले–भटकों को रास्ता दिखाने की परंपरा है। अतरू जो दीपक ऊंची इमारत या छत पर रखा जाता है, उसे आकाशदीप और जो चौराहों या दरवाजों पर रखा जाता है, उसे भू–दीप' कहते हैं। दीपक को वृक्षों के नीचे तथा शाखाओं पर भी रखने की परम्परा रही है। तुलसी के पौधे के नीचे घरों में महिलाएं जो दीपक रखती हैं। उसे श्वृंदावन दीपक' कहते हैं। तात्पर्य यह कि अवसरों स्थानों तथा उद्देश्यों के अनुसार ही इन दीपकों को विभिन्न नाम स्वरूप प्रदान किए गए। दीपक की महत्ता इस बात से भी प्रकट हो जाती है कि संगीत की दुनिया में यह एक विशेष राग श्दीपक राग' बना हुआ है। कहते हैं कि दीपक राग को जब संगीतकार गाते थे तो दीपक स्वयं ही जलने लगते थे। दीपक की महिमा का वर्णन सभी संतों, साहित्यकारों और कवियों ने किया है। इसका प्रमुख कारण है कि दीपक प्रकाश का प्रतिरूप है। प्रकाश को ही ज्ञान कहा गया है। दीपक जलने से बुरी चेतनाएं तो लुप्त होती ही हैं, भली चेतनाएं जागृत भी हो उठती हैं। दीपक साहस का संचार करता है। महात्मा तुलसीदास ने दीपक को श्ज्ञानदीप' की संज्ञा देते हुए रामचरितमानस में कहा है राम नाम मनि दीप धरि, देहि देहरी द्वारध्तुलसी भीतर बाहरो, जो चाहत उजियार।। दीपक के बारे में जिस प्रकार भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण है। उसी प्रकार दीपक भी समय काल के अनुसार भिन्न–भिन्न रूप एवं आकार लेता रहा। दीपावली पर जलाए जाने वाले दीपक अब विद्युत बल्बों में बदल रहे हैं। परिणामस्वरूप दीपक अब पूजा–घरों एवं मंदिरों में ही दिखाई देते हैं। हमारे यहां कार्तिक मास की अमावस्या को दीपदान करना व दीपक जलाना कई प्रकार से फलदायी बताया गया है। अतरू यदि पूरे माह दीपक जलाना संभव नहीं हो सके तो फिर अमावस्या की रात दीपक अवश्य जलाना चाहिए।

संयम, अनुशासन सफलता के स्रोत

मन ही मन यदि आपने किसी कठिन कार्य को करने का संकल्प ले लिया तो निरंतर जिजीविषा और संयम के साथ संघर्ष हर बड़ी जीत और सफलता के उत्तम मार्ग हैं। निराशा से बढ़कर कोई अवरोध नहीं अतः निराशा, हताशा को त्यागें और ऊर्जा उत्साह के साथ आगे बढ़े, सफलता आपके कदमों पर होगी। हर बड़ा व्यक्ति जो हमें समाज से अलग हटकर खड़ा दिखाई देता हैस जिसे हम विलक्षण मानते और प्रतिभा संपन्न मानते हैं और आज के संदर्भ में हम उसे सेलिब्रिटी कहते हैं तो निसंदेह उसकी इस सफलता के पीछे अनवरत श्रम, अदम्य मानसिक शक्ति और संयम छुपा होता हैस बड़ी सफलता प्राप्त करने का कोई सरल उपाय या शॉर्टकट नहीं होता है। विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य की मानसिक दृढ़ता एवं संकल्पित कठिन श्रम ही सफलता के रास्ते खोलते हैं।यूं तो हर इंसान के जीवन में विशेषताएं, मान्यताएं, प्रतिबद्धताओं और आकांक्षाएं होती हैंस सभी लोग मूलभूत आवश्यकताओं के साथ साथ सामाजिकता , प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा जैसी उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते हैंस मानव की स्वाभाविक और अदम्य इच्छा की पूर्ति के संपूर्ण जीवन और उसके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है किंतु व्यक्ति की इच्छा,आकांक्षा सफलता उस उसके मूल्यों,सिद्धांतों और आदर्शों की कीमत पर कतई नहीं होनी चाहिए स यदि व्यक्ति की आकांक्षा,सफलता और इच्छा उसकी अदम्य इच्छा, भूख और मूल्यों को समाविष्ट ना करते हुए दूसरी दिशा में जाती हो तो ऐसे में उसकी सफलता पूरे मानव समाज और मानवता के लिए संकट का कारण भी बन सकती हैस जिस तरह एक वैज्ञानिक मेहनत, लगन, प्रयोगशाला में मानवी संविधान मूल्यों से ओतप्रोत मानव कल्याण के उपकरण न बनाकर जैविक व रासायनिक हथियार बनाकर व्यापक नरसंहार जैसे अमानवीय अविष्कार को मूर्त रूप दे, तो यह समाज के लिए खतरनाक हो सकता हैस यही वजह है की सफलता का नक्शा और इच्छा के पीछे माननीय मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक भी है। मूल्य, सिद्धांत और नैतिकता जीवन के लक्ष्य और उसके क्रियान्वयन में सर्वाधिक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैंस सफलता की धारणा केवल स्थापित मापदंड न होकर मानवीय मूल्यों से जुड़ा होकर मानव कल्याण के लिए भी होना चाहिएसइसमें कोई संदेह नहीं की विश्व भर की सभी सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों में अहिंसा, सत्य ,करुणा, सेवा, दया और विश्व बंधुत्व की भावना की निर्विवाद उपस्थिति दिखाई देती हैस और वैश्विक विकास की अवधारणा भी इन्हीं बिंदुओं पर रखकर तय की जाती हैस भारत में प्राचीन काल से ही मूल्यों की प्रतिबद्धता की परंपरा चली आ रही हैसऋषि–मुनियों ने तो यहां तक कहा है कि जिसका चरित्र तथा माननीय आदर्श चला गया वह व्यक्ति, मृतक लाश की तरह हो जाता है। भारतीय संस्कृति में आदर्शों तथा मूल्य के पोषक उदाहरणों की अंतहीन सूची है जिनमें कबीर, रैदास, संत,ज्ञानेश्वर तुकाराम,मोइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, रहीम,खुसरो, गांधी,नेहरू, टैगोर, सुभाष, विवेकानंद जैसे महान लोग सिद्धांतों की प्रतिबद्धता को अपने जीवन की सफलता मानकर अपने जीवन को समाज को सौंप दिया था।परिणाम स्वरूप व्यक्ति को महज सफलता का पुजारी ना बन कर मूल्यों के प्रति प्रतिबंध होने का प्रयास करना चाहिए। ताकि तनिक सफलता के स्थान पर चिरस्थाई एवं समाज उपयोगी सफलता प्राप्त हो सके। वर्तमान में यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति स्वाद तथा सफलता के लिए अक्सर अपने मूल्यों को तिलांजलि दे देता है। वर्तमान सुख एवं लालच चिरस्थाई सफलता के सामने महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक हो जाता है ।आज मनुष्य तत्काल एवं अस्थाई सफलता के पीछे माननीय मूल्यों प्रतिबद्धताओं को किनारे कर उस मरीचिका की तरफ दौड़ रहा है जो अत्यंत अस्थाई एवं पानी के बुलबुले की तरह है। और इससे न तो कोई इतिहास बनता है और ना ही कोई प्रतिमान ही स्थापित होता है। पानी का पतला रेला नदी का रूप नहीं ले सकता। उसी तरह बिना मूल्यों की सफलता स्थाई नहीं होती है। राजनीति तथा प्रशासन में मूल्यों सिद्धांतों की तो ज्यादा आवश्यकता महसूस की जाती है। क्योंकि राष्ट्र तथा नीति निर्देशक तत्वों को संचालन की दिशा देने के लिए मानवीय संवेदना, मूल्य और सिद्धांतों की अत्यंत आवश्यकता होती है। अन्यथा समाज दिग्भ्रमित होकर बिखरने के कगार पर पहुंच जाता है। राष्ट्र विखंडित होने की स्थिति में आ जाता है। मूल्य विहीन समाज अपने अधिकारों के दुरुपयोग तथा कर्तव्य के प्रति लापरवाही तथा उदासीनता के चलते समाज को सोचनीय स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है। सफलता तब ही शाश्वत तथा स्थाई हो सकती है जब इसमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों का समावेश होता है। वही देश और राष्ट्र चिरस्थाई तथा लंबे समय तक स्वतंत्र रह सकता है, जिसके शासक एवं प्रजा अपने संपूर्ण कार्य मूल्यों, उसूलों और नैतिक प्रतिबद्धता के मार्ग पर चलकर वैश्विक देशों से अपने संबंध निर्मल तथा सैद्धांतिक बनाकर रखता हैअन्यथा उस राष्ट्र को विखंडित और पराधीन होने से कोई नहीं बचा सकता।

हृदयनारायण मिश्र अध्यक्ष और नितेन्द्र श्रीवास्तव डिप्लोमा इंजीनियर्समहासंघ महासचिव निर्वाचित

लखनऊ। उप्र डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ की 35वीं कौंसिल सभा डा. राम मनोहर लोहिया प्रेक्षगृह तेलीबाग, लखनऊ में प्रान्तीय अध्यक्ष इं. राकेश कुमार त्यागी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में कर्मचारी इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण हड़ताल वर्ष 1974 के जन नायकों में से एक तथा उ.प्र. डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ के संस्थापक सदस्य इं हेमेन्द्र प्रताप जी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन महासचिव इं. जी. एन. सिंह द्वारा किया गया। कौंसिल सभा के अन्तिम चरण में मुख्य निर्वाचन अधिकारी इं. एस. सी. दीक्षित जी निर्वाचन अधिकारी, इं. एस. पी. श्रीवास्तव तथा इं. एस. पी0 मिश्रा जी की निर्वाचन समिति द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न की गई। इसमें सर्वसम्मति से लोक निर्माण विभाग के इं. हृदय नारायण मिश्र को प्रान्तीय अध्यक्ष तथा सिंचाई विभाग के इं. नितेन्द्र श्रीवास्तव को महासचिव के साथ–साथ 21 सदस्यीय प्रान्तीय कार्यकारिणी के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा की गयी। महासंघ के संरक्षकों द्वारा सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनायें दिये जाने के साथ ही कौंसिल सभा सम्पन्न हुई।कौंसिल सभा में प्रदेश के समस्त तकनीकी विभागों के प्रान्तीय अध्यक्ष,महासचिव,महामंत्री तथा उ0 प्र0 डिप्लोमा इंजीनियर्स महासंघ के जनपद,मण्डल एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों के साथ–साथ प्रदेश के समस्त 400 प्रतिनिधि कौंसिलर्स ने भाग लिया। उक्त कौंसिल सभा में तकनीकी विभागों में कार्यरत डिप्लोमा अभियंताओं की विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्ष करते हुए पुरानी पेंशन योजना बहाल करने, केन्द्र सरकार द्वारा 03 मार्च 2023 को जारी आदेश के अनुसार नई पेंषन लागू होने से पूर्व जारी विज्ञापनों के माध्यमों से नियुक्त कार्मिकों को दी गयी पुरानी पेंशन के अनुरूप प्रदेश के कार्मिकों को भी पुरानी पेंशन दिये जाने, जूनियर इंजीनियर्स को प्रारम्भिक ग्रेड पे 4800 प्रदान किये जाने, कोरोना काल में सरकार द्वारा वापस लिये गये रु0 400.00 के विशेष भत्ते को बहाल करने व 30 लीटर पेट्रोल के बराबर वाहन भत्ता प्रदान करने, विभिन्न माध्यमों से जूनियर इंजीनियर्स के पद पर निर्धारित अर्हता 03 वर्षीय डिप्लोमा के अतिरिक्त डिग्रीधारी अभियंताओं को भी शामिल किये जाने के हो रहे शड़यंत्र को तत्काल समाप्त करने सहित 29 सूत्रीय मांगों का प्रस्ताव पारित कर वार्ता,संघर्ष कार्यक्रमों के माध्यम से समाधान निकालने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। कौंसिल सभा में संरक्षकगण इं. एस. सी. दीक्षित, इ. के.डी. द्विवेदी, इं. विष्णु प्रसाद तिवारी, इं. एस.पी. श्रीवास्तव, इं. एस.पी. मिश्रा, इं. अमरनाथ, इ. एस.के. पाण्डेय सलाहकार, इं. सुधीर पंवार सलाहकार के अतिरिक्त इं. हरि किशोर तिवार अध्यक्ष राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद, घटक संघों के अध्यक्ष,महासचिवों में इं. ए.डी. द्विवेदी, इं. प्रकाश चन्द्र, इं. जी.बी. पटेल, इं. जय प्रकाश, इं. श्रीप्रकाश गुप्ता, इं. दिवाकर गौतम, इं. विनोद कुमार तिवारी, इं. आर.पी. सोनकर, इं. रूद्रप्रकाश वर्मा, इं. अरूण कुमार, इं. गजेन्द्र कुमार, इं. गौरी शंकर कुशवाहा, इं. गिरीश कुमार, इं. विरेन्द्र कुमार सिंह, इं. एस.डी. द्विवेदी, इं. गंगा प्रसाद, इं. अमरजीत यादव सहित समस्त जनपदों व मण्डलों के अध्यक्ष,सचिव तथा प्रत्येक विभाग के कौंसिलर्स उपस्थित हुए।

आवारा पशुओं की समस्या को लेकर अखिलेश यादव ने योगी सरकार को घेरा

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में आवारा पशुओं की समस्या पर सोमवार को राज्य की भाजपा

सरकार से स्पष्टीकरण मांगा। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर पूछा, "छुट्टा पशुओं के लिए भाजपा सरकार स्पष्टीकरण दे–भाजपा शासन में कितने लोग छुट्टा पशुओं की वजह से मारे गये या घायल हुए–छुट्टा पशुओं के कारण जिनकी मौत हुई, उनमें से कितनों को मुआवजा दिया गया और कितना दिया गया?" उन्होंने आगे पूछा, "जो गौशालाएं खोली गयीं हैं उनमें कुल कितने छुट्टा पशु हैं, गौशालाओं के काम का आंकलन कब किया गया और उसके क्या परिणाम निकले? अधिकतर गौशालाओं पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के खिलाफ क्या कार्रवाई की गयी?"

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, अखिलेश यादव ने यह सवाल भी किया कि इस समस्या से निपटने के लिए नियुक्त किये गये अधिकारियों ने क्या किया। उन्होंने कहा "चुनाव के बाद इस समस्या का 15 दिन में समाधान निकालने की जो बात की गयी थी वह वचन था या जुमला ?" वर्ष 2022 के विधानसभा चुनावों के दौरान, भाजपा नेताओं ने सरकार बनने के 15 दिनों के भीतर, आवारा पशुओं की समस्या का समाधान निकालने का वादा किया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी उस चुनाव में इस समस्या का जिक्र किया था। यादव ने अयोध्या से समाचार की एक रिपोर्ट भी पोस्ट की जिसका शीर्षक है, "छुट्टा घूम रहे 2500 यमराज।

उप मुख्यमंत्री ने लगाया जनता दर्शन कार्यक्रम

जन समस्याओं का त्वरित गति से किया जाए निदान : केशव

लखनऊ। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने–7 कालीदास मार्ग स्थित आवास कैम्प कार्यालय पर आयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम में विभिन्न जनपदों से आये लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं के त्वरित निस्तारण का विश्वास दिलाया। उन्होने जनसुनवाई के दौरान एक–एक व्यक्ति की समस्या को पूरी गम्भीरता से सुना तथा समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए हैं कि समस्याओं का निराकरण इस प्रकार किया जाय कि समस्याग्रस्त व्यक्ति पूरी तरह से संतुष्ट रहें और उन्हें दुबारा कहीं भटकना न पड़े और बार–बार चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने महिलाओं, दिव्यांगों, बुजुर्गों के पास स्वयं जाकर उनकी समस्याओं व शिकायतों को सुना और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित गति से निदान करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जनता दर्शन में ,अवैध कब्जे, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आवंटन, स्कूल निर्माण, भूमि पट्टा, कब्जा दिलाने,भूमि विवाद, अतिक्रमण हटाने,सड़क बनवाने, बिजली,दुर्घटनाओं से संबंधित, अभियुक्तों की गिरफ्तारी कराने, आदि से संबंधित विभिन्न समस्याएं प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने रखी। जनता दर्शन मे वाराणसी, बहराइच, बाराबंकी, झांसी, बदायूं, आजमगढ़, कासगंज, लखीमपुर, गोण्डा, कन्नौज, फतेहपुर, बरेली, औरैया, प्रयागराज, बागपत, जालौन, आगरा, श्रावस्ती, मुरादाबाद, देवरिया, रामपुर, लखनऊ, इटावा, जौनपुर, मैनपुरी, सीतापुर, ललितपुर, सुल्तानपुर, कानपुर देहात, सहित लगभग 3 दर्जन से अधिक जिलों से कई सैकड़ा लोगों ने आकर अपनी समस्याएं रखी। उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने समस्याओं के निस्तारण के बावत बलिया, पीलीभीत, प्रतापगढ़, ललितपुर, अमरोहा सहित अन्य कई जिलाधिकारियों, औरैया, ललितपुर के पुलिस अधीक्षक, फिरोजाबाद के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक वाराणसी के पुलिस कमिश्नर, सीईओ ग्रेटर नोएडा सहित अन्य सम्बंधित उच्चाधिकारियों व शासन के उच्चाधिकारियों से दूरभाष पर वार्ता भी की।

मंडलायुक्त ने इंटीग्रेटेड स्मार्ट कंट्रोल सेंटर का किया निरीक्षण,शहर की सेफ सिटी कार्यो की समीक्षा बैठक

लखनऊ। महिलाओं, सीनियर सिटीजन, बच्चों व दिव्यांगों की सुरक्षा तथा उनके सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत मण्डलायुक्त रोशन जैकब की अध्यक्षता में नगर की सेफ सिटी कार्यो की समीक्षा बैठक स्मार्ट सिटी कार्यालय सभागार में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर मंडलायुक्त द्वारा सुरक्षा के दृष्टिगत लगाए गए सीसीटीवी कैमरे, पोल फाउण्डेशन, कमाण्ड कन्ट्रोल सिस्टम कार्यों की समीक्षा की गई। मंण्डलायुक्त ने निर्देशित किया कि व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम, सर्विलांस कैमरा, पोल फाउण्डेशन, कमाण्ड कन्ट्रोल सिस्टम, पावर कनेक्शन, नेटवर्क सिस्टम सभी उपकरण सुचारू रहे। मंडलायुक्त ने संबंधित अधिकारीगण को निर्देश देते हुए कहा कि शहर में सर्विलांस, सुरक्षा एवं अन्य सुविधाओं के दृष्टिगत कैमरों की संख्या में बढ़ोत्तरी करते हुए कंट्रोल रूम से जोड़ा जाए। संबंधित अधिकारियों द्वारा बताया गया कि 800 कैमरा के सापेक्ष 716 सर्विलांस कैमरे विभिन्न स्थानो पर लगा दिया गया है। पिंक बस सर्विलांस में 165 के सापेक्ष 102 कैमरा स्टाल कर दिया गया है। बैठक के दौरान मंडलायुक्त ने कहा कि हॉस्पिटल, पैट्रोल टंकी, होटल,पार्क व पार्किंग आदि संस्थाओं पर लगे विभिन्न कैमरों को कमांड सेंटर से जोड़ने में तेजी लाने के निर्देश दिये। मंडलायुक्त ने इंटीग्रेटेड स्मार्ट कंट्रोल सेंटर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारियों द्वारा बताया गया कि विभिन्न संस्थाओं के 400 कैमरे कंट्रोल रूम से जोड़ दिया गया है। मंडलायुक्त ने कहा कि जो भी संस्थाएं अपने कैमरे को सुरक्षा की दृष्टिगत कंट्रोल रूम से जुड़वाना चाहते हैं वो यहाँ आकर इंटीग्रेटेड स्मार्ट कंट्रोल सिस्टम में जुड़वा सकते हैं। इस अवसर पर जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार व अपर नगर आयुक्त सहित स्मार्ट सिटी ऑफिस के संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

महिला का गला रेता...सड़क किनारे तड़पती रही

लखनऊ,(यूएनएस)। लखनऊ में महिला का गला रेतकर उसे सड़क किनारे फेंक दिया गया। सोमवार सुबह लोगों ने महिला को झाड़ियों के बीच तड़पते देखा। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने उसे पीजीआई के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया। महिला पारा के फतेहगंज में रहती है। महिला की मां ने कहा, एक बुर्का पहने महिला इनोवा कार से आई थी। मेरी बेटी उसके साथ गई। फिर हमें कुछ पता नहीं चला। मोबाइल भी नहीं मिल रहा। आज सुबह पुलिस से मालूम हुआ कि मेरी बेटी को किसी ने मारने का प्रयास किया है। वो ट्रामा सेंटर में है। डॉक्टर उसकी हालत गंभीर बता रहे हैं। खून से लथपथ महिला मोहनलालगंज में मिली है। परिजन रविवार को ही उसकी गुमशुदगी दर्ज करवा चुके थे। पुलिस की शुरुआती छानबीन में सामने आया कि महिला पति से अलग अपने मायके में रहती थी। पुलिस की जांच पुरानी रंजिश, रेप की कोशिश और विरोध पर हमला जैसे बिंदुओं के आस–पास है। महिला के होश में आने के बाद घटना का पता चल पाएगा। महिला के पिता ने बताया कि हमारी बेटी की 15 साल पहले उन्नाव में रहने वाले युवक से शादी हुई थी। 2 बच्चे होने के बाद घर की आर्थिक स्थति बिगड़ने लगी। इसके बाद हमारी बेटी मायके आ गई। अब वह घर पर ही रहती है। रविवार शाम करीब 4 बजे एक लड़की, जोकि बुर्का पहने हुए थी। इनोवा कार में आई। बेटी ने कहा

कि कुछ देर में लौट आऊंगी। हमें लगा कि वो नौकरी के लिए जा रही होगी। लेकिन रात तक वो वापस नहीं आई। इसके बाद हमने पारा थाने में पुलिस को जानकार दी। फिर सोमवार सुबह हमें बताया गया कि हमारी बेटी घायल अवस्था में मोहनलाल गंज में मिली है। इन बयानों के बाद पुलिस अब इनोवा से आई महिला को ढूंढ रही है। पुलिस के मुताबिक, मोहनलालगंज के कल्ली पूर्व के पास सावन भट्ठा के सामने एक महिला के कराहने की आवाजें सुनाई दीं। लोगों ने पास जाकर देखा तो लहूलुहान महिला कराह रही थी। उसके गले से खून रिस रहा था। पास ही झाड़ियों में आग लगी हुई थी। वो उसी तरफ घसीटती हुई जाने का प्रयास कर रही थी। लोगों ने महिला को संभाला।

पुलिस को जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, हालात देखकर लगता है कि महिला के साथ रेप का प्रयास हुआ है। मोहनलालगंज पुलिस ने महिला की हालत को देखते हुए ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया है। युवती की जानकारी के मुताबिक परिजनों और स्थानीय पुलिस को सूचना दी गई। युवती के बयान और जांच पड़ताल के आधार पर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

भाजपा मुख्यालय के बाहर शिक्षक अभ्यर्थियों का प्रदर्शन,पुलिस ने जबरन घसीटकर हटाया

लखनऊ,(यूएनएस)। लखनऊ में भाजपा मुख्यालय पर सोमवार को सैकड़ों की संख्या में शिक्षक अभ्यर्थी धरना–प्रदर्शन करने पहुंच गए। आपको बता दें 69000 शिक्षक अभ्यर्थियों में से 6800 रिजर्वेशन के अभ्यर्थियों को अब तक नियुक्ति पत्र नहीं मिलने का मामला चल रहा है। नियुक्ति पत्र नहीं मिलने से आक्रोशित सैकड़ो की संख्या में अभ्यर्थियों ने भाजपा मुख्यालय का घेराव कर नियुक्ति पत्र दिए जाने की मांग की। अभ्यर्थियों के घेराव और प्रदर्शन को देखते हुए लखनऊ पुलिस प्रशासन ने उन्हें घसीट कर वहां से हटाया। अभ्यर्थियों का आरोप है कि विभाग कई बार बातचीत की गई लेकिन नियुक्ति पत्र नहीं दिया गया। जबकि 2022 विधानसभा चुनाव के दौरान योगी सरकार ने नियुक्ति पत्र देने का आश्वासन भी दिया था। 5 जनवरी 2022 को 6,800 अभ्यर्थियों की लिस्ट निकली थी। उस लिस्ट के सामने आते ही टीचरों का विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया था और मामला कोर्ट तक चला गया। अब उसी कोर्ट ने सरकार को आदेश दिया है कि अभ्यर्थियों के गुणांक, कैटिगरी, सबकैटिगरी सहित ओबीसी–एससी वर्ग का पूरा 27: और 21:आरक्षण स्पष्ट तरीके से दिखाया जाए। तीन साल के धरना प्रदर्शन को बाद याचिकाकर्ताओं को ये राहत मिल रही है। 14 मार्च 2023 को यूपी के 69000 सहायक शिक्षक भर्ती मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने बड़ा फैसला सुनाया। 69000 सहायक शिक्षक भर्ती की पूरी लिस्ट फिर बनाने को कहा गया है कोर्ट ने 69000 सहायक शिक्षक भर्ती की लिस्ट को गलत माना है। जोर देकर कहा गया है कि 19 हजार से अधिक सीटों पर आरक्षण में विसंगतियां पाई गई हैं। हाई कोर्ट ने सरकार को 3 महीने में पूरी लिस्ट सही करने के दिए निर्देश दिए। आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थियों की तमाम दलीलों को कोर्ट ने स्वीकार किया है और फिर लिस्ट बनाने के आदेश दिए हैं। बड़ी बात ये है कि इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ पीठ ने माना है कि भर्ती के दौरान आरक्षण का घोटाला हुआ है। इसी मामले में पिछले साल 8 दिसंबर 2022 को हाई कोर्ट ने आरक्षण घोटाले पर ऑर्डर रिजर्व रखा था।

डाकघर के माध्यम से घर बैठे बनेगा जीवन प्रमाणपत्र

पेंशनर्स को जीवन प्रमाणपत्र के लिए चक्कर लगाने से निजात

लखनऊ। अब पेंशनरों को जीवन प्रमाणपत्र जमा करने के लिए कोषागार, बैंक या अन्य किसी विभाग में जाने की जरूरत नहीं है। पेंशनर अपने नजदीकी डाकघर के पोस्टमैन या ग्रामीण डाक सेवक के माध्यम से डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट जारी करवा सकते हैं। इसके लिए मात्र 70 रुपये का शुल्क निर्धारित किया गया है। यह प्रमाण पत्र स्वतः संबंधित विभाग को ऑनलाइन पहुंच जाएगा। इससे पेंशन मिलने में कोई रुकावट नहीं आएगी। यह सुविधा सभी डाकघरों में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है। वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि, भारतीय डाक विभाग के माध्यम से सभी विभागों के पेंशनरों को घर बैठे डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट प्रदान करने की सुविधा प्रदान की जा रही है। पेंशनर इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए अपने क्षेत्र के पोस्टमैन के साथ–साथ पोस्ट इन्फो मोबाइल एप द्वारा ऑनलाइन अनुरोध भी कर सकते हैं। इसके लिए पेंशनर को आधार नम्बर, मोबाइल नम्बर, बैंक या डाकघर खाता संख्या और पीपीओ नम्बर देना होगा। पेंशनरों को प्रत्येक वर्ष सामान्यतया नवंबर और दिसंबर माह में कोषागार, बैंक या संबंधित विभाग में जीवन प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होता है। इसके लिए दूरदराज इलाके के पेंशनरों को कोषागार आने में कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं यात्रा आदि में भी काफी व्यय होता है। ऐसे में डाक विभाग की इस पहल से पेंशनरों को काफी सहूलियत मिलेगी। इसके साथ–साथ पेंशनर डाकिया के माध्यम से घर बैठे पेंशन की धनराशि आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम के माध्यम से अपने बैंक खाते से निकाल सकते हैं।

मार्गो के दोनों किनारों पर इंटरलॉकिंग करवाने का फैसला

बहराइच। रिसिया नगर पंचायत क्षेत्र में संकरे मार्गों के चलते आए दिन जाम की स्थिति बन रही है। हादसे की आशंका भी बनी हुई थी। शासन की ओर से चार वार्डों को जाने वाले मुख्य मार्गों के दोनों किनारों पर इंटरलॉकिंग करवाने का फैसला लिया गया है। इसके लिए 1.71 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए है। एक मोहल्ले में कार्य शुरू कर दिया गया है। रिसिया नगर पंचायत के मोहल्ला गायत्री नगर, मोहम्मदनगर, सरस्वती नगर व देवीपुरा में लाखों की आबादी निवास करती है। लेकिन इन मोहल्लों को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग एकल था और इसके किनारे जर्जर थे। जिसके चलते आए दिन जाम की स्थिति बनी रहती थी। संकरा मार्ग होने के चलते ओवरटेक व साइड लेते समय वाहन चालक भी चोटिल हो रहे थे। जिसे देखते हुए वार्डों के सभासदों ने नगर पंचायत अध्यक्ष मुन्नी देवी को सड़क के दोनों किनारों पर इंटरलॉकिंग करवाने की मांग की थी। जिस पर अध्यक्ष मुन्नी देवी ने 1.71 करोड़ का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा था। जिसे शासन ने मंजूर कर लिया और पैसे भेज दिए हैं। अध्यक्ष मुन्नी देवी ने बताया कि देवीपुरा में पक्के मार्ग के किनारे इंटरलाकिंग का कार्य शुरू करवा दिया गया है। उन्होंने बताया कि ठेकेदारों को बेहतर निर्माण के निर्देश दिए गए हैं।नगर पंचायत क्षेत्र में बरसात के समय जलनिकासी की समस्या रहती है। तेज बारिश होने पर गलियों में भारी जलभराव होता है। इस पर विराम लगाने के लिए नगर पंचायत क्षेत्र में देवीपुरा नाले से गुरचाही चौराहे तक नाला निर्माण करवाया जाएगा। नगर पंचायत अध्यक्ष मुन्नी देवी ने बताया कि नाला निर्माण के लिए 1.90 करोड़ का प्रस्ताव भेजा गया है। शासन की ओर से पहली किस्त के रूप में 48 लाख रुपये दिए गए हैं। जल्द नाला निर्माण शुरू करवाया जाएगा।

21 को शिक्षक करेंगे बीआरसी केंद्रों पर मतदान

बस्ती। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ पेंशन बहाली संयुक्त मंच के राष्ट्रीय नेतृत्व के आह्वान पर शिक्षक 21 नवंबर को जिले के सभी बीआरसी पर पुरानी पेंशन के समर्थन में मतदान कराएगा। इसके लिए केंद्रों पर जनपद के पर्यवेक्षक बैलेट बाक्स और आवश्यक प्रपत्र लेकर पहुंचेंगे। मतदान दिन सुबह 10 से शुरू होकर शाम 4 बजे तक चलेगा। बैलेट बाक्स मुख्यालय पर जमा होंगे। 22 नवंबर को मतदान से वंचित रह गए शिक्षक प्रेस क्लब में सुबह 10 से 12.30 बजे तक मतदान कर सकेंगे। यह निर्णय रविवार को न्याय मार्ग स्थित बैठक में संघ ने लिया है। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष उदय शंकर शुक्ल ने की। संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि पुरानी पेंशन बहाली के लिए आंदोलन जारी रहेगा। मतदान प्रक्रिया में जनपद के सभी शिक्षक हिस्सा लेंगे। इस मौके पर कार्यवाहक अध्यक्ष अखिलेश मिश्र, जिला मंत्री राघवेंद्र प्रताप सिंह, संयुक्त मंत्री विजय प्रकाश चौधरी, अभय सिंह यादव, रामभरत वर्मा आदि मौजूद रहे।

त्योहार आते ही साइबर ठग कैश करा रहे ऑफर

नामी ऑनलाइन कंपनियों के बनाए हेल्पलाइन नंबर, फोन करने वालों के अकाउंट खाली

लखनऊ। त्योहारों में नामी ऑनलाइन कंपनियों के ऑफरों के बीच साइबर जालसाज मिलता–जुलता फर्जी लिंक और हेल्पलाइन बनाकर आपका खाता खाली कर रहे हैं। इस तरह की ठगी से बचने के लिए साइबर क्राइम सेल सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से लोगों को जागरूक कर रही है। तेलीबाग

निवासी स्वास्तिक श्रीवास्तव ने ऑनलाइन गीजर खरीदा था। गीजर सही से काम न करने पर गूगल से कंपनी का कस्टमर केयर नम्बर सर्च किया तो एक नंबर मिला। उस नंबर पर कॉल किया तो एक महिला ने फोन रिसीव किया। इसने पहले उनसे प्रोडक्ट और पेमेंट मोड की जानकारी ली। उसके बाद शिकायत दर्ज करने के लिए मोबाइल पर एनी डेस्क एप डाउनलोड करने को कहा। उसकी बातों में आकर स्वास्तिक ने एप लोड कर ली। इसके बाद बात करते–करते उनके खाते के सारे पैसे (57 हजार रुपए) निकल गए। साइबर थाने में विवेक निगम ने शिकायत की अमेजन पर खरीदारी के दौरान उनके खाते में कुछ रुपए क्रेडिट हुए थे। इसके बाद एक मेल के जरिए पता चला कि पैसे कट गए। जब संपर्क किया तो दूसरी तरफ बात करने वाले ने खाते के विषय में जानकारी की। उसके बाद एनी डेस्क एप डाउनलोड कराकर 1.94 लाख रुपए ठग लिए। हालाकि समय से विवेक निगम के साइबर सेल और बैंक से संपर्क करने से उनके पैसे वापस आ गए। साइबर क्राइम सेल के प्रभारी सतीश चंद्र साहू का कहना है, साइबर ठग ऑनलाइन शॉपिंग कराने वाली कंपनी से मिलते–जुलते नामों से ई–मेल व सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर नेटवर्क तैयार करते हैं। इसके जरिए मैसेज व लिंक भेजकर ठगी करते हैं। साथ ही हेल्पलाइन नंबर जारी कर लोगों को ठगी का शिकार बना रहे हैं। इसमें सबसे ज्यादा लोग हेल्पलाइन नंबर पर एक्सचेंज ऑफर और बोनस पॉइंट के चक्कर में फंस रहे हैं। ऐसे में छोटी सी लापरवाही से आपको लाखों का नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसके लिए लोगों को इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

"ऋषि का सद्ज्ञान मानव जीवन को नर से नारायण बना सकता है" : उमानंद शर्मा

लखनऊ। गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत "श्री अयोध्या सिंह मेमोरियल इण्टर कालेज, चिनहट लखनऊ के पुस्तकालय के पुस्तकालय में गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों का 398वाँ ऋषि वांड़मय की स्थापना कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपरोक्त साहित्य गायत्री परिवार की सक्रीय कार्यकर्ती श्रीमती वीना रानी ने अपने प्रिय जीवनसाथी स्व0 पति रामकुमार जी की स्मृति में भेंट किया तथा व्यक्तिगत रूप से छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकध शिक्षिकाओं को भी अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर वाड्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा ने कहा कि "ऋषि का सद्ज्ञान मानव जीवन को नर नारायण बना सकता' है। संस्था के प्रबन्धक शैल सिंह ने ध न्यवाद ज्ञापन व्यक्त किया। इस अवसर पर उमानंद शर्मा, श्री अनिल भटनागर, देवेन्द्र सिंह, वीना रानी, संस्थान के प्रबन्धक शैल सिंह, संस्थान की प्रधानाचार्या पूजा सिंह, उपप्रधानाचार्या शुभ्रा सिंह समन्वयक मनोज पाण्डेय, शिक्षक,शिक्षिकायें सहित छात्र–छात्रायें, मौजूद थे।

चारबाग रेलवे स्टेशन पर लगी आग, फायर विभाग ने किया कंट्रोल, बड़ा हादसा टला

लखनऊ। चारबाग के एनईआर रेलवे स्टेशन पर रविवार देर रात आग लग गई। बताया जा रहा है कि चारबाग के वाशिंग एरिया के पास यह आग लगी थी। यहां लॉन्ड्री रूम भी था। आग ने यहां पड़े कपड़ों तक फैल गई। मौके पर मौजूद लोगों ने आनन–फानन में फायर विभाग को सूचना दी। रेलवे के अधिकारियों ने बताया कि सूचना के करीब 30 मिनट के अंदर ही फायर की टीम मौके पर पहुंच गई। दो गाड़ियों ने 30 मिनट के अंदर ही आग को कंट्रोल कर लिया। ऐसे में रात 2 बजे तक यहां की स्थिति नॉर्मल हो गई। अभी तक आग लगने की वजह से पता नहीं चल पाया है। हालांकि आग की एक बड़ी वजह शॉर्ट सर्किट हो सकता है। बताया जा रहा है कि आग में लॉन्ड्री के काफी कपड़े जलकर खाक हो गए है। रेलवे स्टेशन के अगर यह आग लगी होती है तो बड़ा हादसा हो सकता था। अब रेलवे अधिकारी के इसके कारण के जांच में जुट गए है।

बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर बाइक डिवाइडर से टकराई, युवक की मौत

बांदा। बांदा से बालू खदान राठ जा रहे युवक की बाइक अनियंत्रित होकर बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के चौनेज नंबर–105 पर डिवाइडर से टकरा गई। सिर में चोट आने से युवक की मौत हो गई। देहात कोतवाली क्षेत्र के गुरेह गांव निवासी जितेंद्र सिंह (25) हमीरपुर के राठ तहसील में स्थित बालू खदान में पाटनर था। वह आज दोपहर तीन बजे के करीब गांव से राठ जाने के लिए निकला था। महोबा जिले के खन्ना थाना क्षेत्र से करीब 15 किलोमीटर दूर बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे चौनेज नंबर–105 पर बाइक अचानक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। जिससे बाइक चालक उछलकर डिवाइडर से सिर के बल टकरा गया। हेलमेट न पहने होने से सिर में गंभीर चोटें आई। पुलिस ने उसे एंबुलेंस से राठ सीएचसी भेजा। वहां से परिजन उसे मेडिकल कॉलेज ले आए। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जीजा रतन सिंह ने बताया कि जितेंद्र राठ में संचालित बालू खदान में पार्टनर था। वह प्रतिदिन खदान आया जाया करता था। दो भाइयों में छोटा था। उसकी शादी भी दिसंबर माह में जारी गांव में होनी थी। पिता शिवविलास सिंह का दो माह पहले ही स्वर्गवास हो चुका है। घर में मां कमला हैं। देहात कोतवाली प्रभारी जयचंद्र सिंह ने बताया कि महोबा के खन्ना थाना क्षेत्र में हादसा हुआ था। परिजन उसे मेडिकल कॉलेज ले आए थे। यहां डॉक्टरों ने मृत घोषित किया है। शव का पोस्टमार्टम कराया गया है।

बिसरा चूल्हा बिसरे स्वाद: अवध के व्यंजन हर घर की जरूरत पुस्तक समीक्षा

लखनऊ। आज के टेक्नोलॉजी आधारित परिवेश में ग्रामीण स्वरूप में भी स्वाभाविक रूप से बदलाव आया है। घर घर मे ऐंड्रॉयड फोन और इंटरनेट पहुंच चुका है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपनी परम्परागत पहचान खो रहे हैं। लुप्तप्राय चीजों को संजोने की जिम्मेदारी से हम विरत होंगे तो भावी पीढ़ी अनभिज्ञता की शिकार हो सकती है। पुस्तक शबिसरा चूल्हा बिसरे स्वादरू अवध के व्यंजन की लेखिका ने बहुत ही आवश्यक सब्जेक्ट का चयन किया है। यह पुस्तक आधी आबादी के लिए सम्पूर्ण पुस्तक कही जाए तो हमें नही लगता कि गलत होगा। महिलाओं के लिए एक बेहतरीन पाठ्य और ग्राहय सामग्री से परिपूर्ण पुस्तक है। जो पहले दादी,चाची,माताएं बेटियों को सिखाती थी आज उसका अभाव है। वर्तमान में जरूरी है कि लुप्तप्राय लोक व्यंजनों को लिपिबद्ध करके गृहणियों को उपलब्ध कराया जाये, इस जिम्मेदारी को लेखिका उर्मिला सिंह ने बड़े करीने से सजाकर लिपिबद्ध किया है। यह बड़ा सराहनीय प्रयास है जो उम्मीद है सबकी पसंद होगा। लोक व्यंजन केवल भोजन मात्र नही है, ई में लोक संस्कृति का समावेश है। परोसी गई थाली से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक हालात खुद ब खुद सामने आ जाते हैं। जिन जिन अनाजों को हम भूलते जा रहे हैं, लेखिका ने उनकी याद ताजा कर दी है। पुस्तक शबिसरा चूल्हा बिसरे स्वादरूअवध के लोक व्यंजन हर घर के किचन तक पहुँचनी चाहिए। चूल्हे को हम भूल गए हैं, जो विस्मृत करने लायक नहीं है।

एएमयू कोर्ट द्वारा नए कुलपति के लिए तीन नामों के पैनल की सिफारिश

अलीगढ़। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शासी संस्था, यूनिवर्सिटी कोर्ट द्वारा आज आयोजित विशेष बैठक में नये कुलपति की नियुक्ति के लिए विश्वविद्यालय के विजिटर एवं भारत के राष्ट्रपति को तीन नामों के एक पैनल की सिफारिश की गयी है। यूनिवर्सिटी कोर्ट ने नए कुलपति के पैनल के लिए प्रोफेसर मुजफ्फर उरूज रब्बानी जो एएमयू की मेडिसिन फैकल्टी के पूर्व अधिष्ठाता रह चुके हैं, प्रोफेसर फैजान मुस्तफा जो चाणक्या नेशनल ला यूनिवर्सिटी पटना के कुलपति हैं और विश्वविद्यालय के विधि विभाग में प्रोफेसर हैं तथा प्रोफेसर नईमा खातून जो वीमेन्स कालिज की प्रिन्सिपल और मनोविज्ञान की प्रोफेसर हैं, के नामों की सिफारिश की है।

बैठक में 84 सदस्यों ने भाग लिया, जिसकी अध्यक्षता कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर मोहम्मद गुलरेज ने की। एएमयू के पूर्व कुलपति श्री नसीम अहमद चुनाव के मुख्य चुनाव अधिकारी थे।

प्रोफेसर रब्बानी को 61 वोट, प्रोफेसर मुस्तफा को 53 और प्रोफेसर खातून को 50 वोट मिले, जबकि प्रोफेसर फुरकान कमर और प्रोफेसर कय्यूम हुसैन को क्रमशः 45 और 43 वोट प्राप्त हुए। प्रोफेसर कमर और प्रोफेसर हुसैन उन पांच नामों के पैनल में शामिल थे, जिसकी अनुशंसा विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने गत 30 अक्टूबर को हुई अपनी बैठक में की थी। एएमयू रजिस्ट्रार, मोहम्मद इमरान (आईपीएस) ने कोर्ट बैठक का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापित किया।

भारतीय ब्राह्मण एकता फाउंडेशन की बैठक सम्पन्न

लखनऊ। आज श्री राम यज्ञ भवन निकट भुईयन देवी मंदिर, 60 फिट रोड जानकीपुरम लखनऊ में भारतीय ब्राह्मण एकता फाउंडेशन की बैठक सम्पन्न हुयी। उक्त बैठक प्रारंभ होने से पूर्व फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 जानकी शरण शुक्ल, राष्ट्रीय महासचिव बी.एन. मिश्र, मुख्य संरक्षक विकास पाण्डेय, संरक्षक राम भवन मिश्र, अंजनी कुमार पाण्डेय, पंकज तिवारी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनुराग कुमार शुक्ला, प्रदेश अध्यक्ष अरविंद मिश्र, प्रदेश सचिव राम तिवारी, शिवाकांत द्विवेदी, उमा मिश्रा, जया पाण्डेय, अर्चना मिश्रा के अतिरिक्त उपस्थित सभी गणमान्य विप्र बंधुओं द्वारा 'भगवान परशुराम जी' की प्रतिमा पर माल्यार्पणध पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त और दीप प्रज्वलित किया गया। बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 जानकी शरण शुक्ल की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुयी जिसका संचालन संरक्षक श्री अंजनी कुमार पाण्डेय ने किया। बैठक में उपस्थित सभी विप्र बंधुओं को माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात उपस्थित संरक्षक मंडल,पदाधिकारियों एवं सभी लोगों द्वारा ब्राह्मण हितों के सम्बंध में अपने अपने विचारध्सुझाव दिये गये। मुख्य संरक्षक विकास पाण्डेय, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 जानकी शरण शुक्ल,राष्ट्रीय महासचिव बी.एन. मिश्र द्वारा भारतीय ब्राह्मण एकता फाउंडेशन उद्देश्य,विस्तार तथा ब्राह्मण हितों की रक्षा और उनके कल्याण के सम्बंध में बृहत चर्चा किया गया। सभी विप्र बंधुओं को बैठक में उपस्थित होने के लिये फाउंडेशन की तरफ से उन्हें धन्यवाद दिया गया। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 जानकी शरण शुक्ल द्वारा इस बैठक को आयोजित करने के लिये संरक्षक श्री राम भवन मिश्र को बहुत–बहुत बधाई देकर आभार प्रकट किया।

तीन लाख से अधिक उपभोक्ताओं को मिलेगा ओटीएस का लाभ

बस्ती। बिजली उपभोक्ताओं के लिए एक मुश्त समाधान योजना लागू हो गई है। आठ नवंबर से उपभोक्ताओं का पंजीकरण शुरू होगा। विभागीय अनुमान के मुताबिक इससे जनपद के तीन लाख से अधिक उपभोक्ता लाभान्वित होंगे। योजना में घरेलू, वाणिज्यिक, निजी संस्थान, निजी नलकूप व औद्योगिक उपभोक्ता लाभ ले सकते हैं। एक किलोवाट से अधिक भार वाले घरेलू उपभोक्ताओं को एकमुश्त भुगतान के साथ किस्तों में भुगतान के दो विकल्प दिए जाएंगे। 30 नवंबर तक संपूर्ण बकाये का भुगतान करने पर 90 प्रतिशत की छूट, तीन किश्तों में भुगतान पर 80 और छह किश्तों में भुगतान पर 70 प्रतिशत तक की छूट मिलेगी। एक से 15 दिसंबर तक पूर्ण भुगतान पर 80 प्रतिशत की छूट, तीन किश्तों में भुगतान पर 70 प्रतिशत और छह किश्तों में भुगतान पर 60 प्रतिशत की छूट, 16 दिसंबर के बाद पूर्ण भुगतान पर 70 प्रतिशत की छूट, तीन किस्तों में भुगतान पर 60 प्रतिशत तथा छह किस्तों भुगतान पर 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी। ओटीएस योजना में पंजीकरण कराने के लि उपभोक्ता उपखंड अधिकारी कार्यालय, अवर अभियंता कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। इसके अलावा वह जन सेवा केंद्र अथवा पावर कारपोरेशन की वेबसाइट पर खुद पंजीकरण करा सकते हैं।

पाइपलाइन से हर बेड पर पहुंचेगी ऑक्सीजन

बहराइच। मेडिकल कॉलेज में 65 लाख रुपये की लागत से लिक्विड मेडिकल ऑक्सीजन (एलएमओ) प्लांट का निर्माण हो रहा है। बीते रविवार को मशीनें व टैंक आ गए है। इस माह के अंत तक यह प्लांट बनकर तैयार हो जाएगा। इससे मेडिकल कॉलेज के सभी बेड पर पाइपलाइन के जरिए ऑक्सीजन मिल सकेगी। प्लांट की ऑक्सीजन की शुद्धता भी सौ प्रतिशत रहने का दावा किया जा रहा है। कार्यदायी संस्था एनाक्स प्राइवेट लिमिटेड की ओर से तेजी से निर्माण कार्य कराया जा रहा है। 20 किलोलीटर क्षमता वाले इस प्लांट के लगने के बाद बेडों पर ऑक्सीजन पहुंचाने के लिए पाइपलाइन बिछाई जाएगी। 40 लाख आबादी वाले जिले के मेडिकल कॉलेज में बहराइच के साथ ही गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती के अलावा पड़ोसी देश नेपाल के बड़ी संख्या में मरीज आते हैं। वर्तमान में जिले में डेंगू तथा वायरल बुखार का प्रकोप चल रहा है, जिससे हर रोज दो से ढाई हजार मरीज पहुंचते हैं। इसमें तमाम मरीजों को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है। इसके लिए शासन की ओर से मेडिकल कॉलेज में पांच ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किए गए थे, जिससे ऑक्सीजन की कमी दूर हुई। अब मेडिकल कॉलेज में एलएमओ प्लांट स्थापित किया जा रहा है। इस प्लांट में लिक्विड ऑक्सीजन स्टोर की जाएगी। मशीनें व टैंक पहुंच गया है। मेडिकल कॉलेज प्रशासन इसी महीने के अंत तक प्लांट बनकर तैयार होने की बात कह रहा है।

३६ दिन बाद कब्र से निकाला गया महिला का शव

बहराइच। जिले के रामगांव थाना क्षेत्र निवासी एक महिला की बीते 28 सितंबर को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। शौच के लिए निकली महिला का शव तालाब में पड़ा मिला था। जिसके बाद डूबने से मौत की आशंका में घर पर मौजूद बच्चों ने शव को दफन कर दिया था, लेकिन मृतका के बड़े बेटे ने अब गांव के ही कुछ लोगों पर हत्या की आशंका जाहिर की है। जिस पर घटना के लगभग 36 दिन बाद महिला के शव को कब्र से निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। रामगांव थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत रेहुवा मंसूर निवासी जमीला खातून (55) बीते 28 सितंबर की शाम नित्यकर्म के लिए निकली थी। उसका शव संदिग्ध परिस्थितियों में तालाब में पड़ा मिला था। मृतका के बड़े बेटे मोहम्मद शकील ने बताया कि घटना के समय वह पुणे में था। वहां उसको मां के मौत की सूचना मिली। घटना के समय घर में छोटा भाई और बहन थी। जब तक मैं घर पहुंचता शव को दफना दिया गया था। शकील ने आरोप लगाया कि इस दौरान गांव के कुछ लोगों को मां की हत्या कर शव दफनवा देने की बात करते सुना, जिसके बाद शक हुआ। प्रकरण के खुलासे के लिए 12 अक्टूबर को डीएम को शिकायती पत्र देकर शव का पोस्टमार्टम व जांच की मांग की थी। थाना प्रभारी शशि कुमार राणा ने बताया कि नायब तहसीलदार की मौजूदगी में कब्र से शव निकलवा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस की मौजूदगी में वितरित की गई डीएपी

बस्ती। दुबौलिया क्षेत्र के साधन सहकारी समित बैरागल वा पारा में पुलिस की मौजूदगी में डीएपी का वितरण कराया गया। डीएपी पहुंचने की सूचना क्षेत्र में फैलते ही बड़ी संख्या में किसान समिति पर पहुंचे। भीड़ देखकर सचिव को पुलिस बुलानी पड़ी। सचिव ने बताया कि रबी फसली सीजन शुरू हो चुका है। किसान सरसों, मटर व चना की बुवाई के लिए डीएपी लेने पहुंचे थे। सभी को एक–एक बोरी उर्वरक दिया गया है। जिला मुख्यालय से महज 340 बोरी ही डीएपी मिली थी।

अवध की आवाज हिन्दी दैनिक, प्रकाशक ,मुद्रक व स्वामी,अनिल कुमार सिंह द्वारा स्काई लाइन प्रिन्टर्स,119/23 खन्दारी लेन, लालबाग, लखनऊ उ0प्र0 से मुद्रित तथा डी–97/3 व 7,सेक्टर–7, इन्दिरा नगर,लखनऊ,उ0प्र0 से प्रकाशित। सम्पादक अनिल कुमार सिंह फोन : 0522–4340954 मो0–7905407289, Email: avadhkiaawaz@gmail.com
R.N.I.-UPHIN/2012/45127
नोट : समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादोंका न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।